

सिद्धिलक्ष्मीयद्विति

आ. ५. म. क.

1.016

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVE



सिद्धिलक्ष्मीयद्धति

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ॐ श्रीगौरीशुं सिद्धिलक्ष्मी नमः॥ ॥ सुहृन्नामोऽङ्गदंवां  
यद्विष्णोः पतिः शिरसां । नमोऽभिनिवशा रक्ष्म सिद्धिलक्ष्मी  
जयपदां ॥ ॥ वाक्मूढं कृत्वा कथय ॥ वक्त्रं च सिताम्भुज  
मधुसूतं चित्रं मण्डलं गुह्यं सुटिकारं वनारय धानिनी  
वामाङ्गं किं यूनं पत्रमानन्दनं निर्गुणं वदनीयं



द्वेननिजधीअमूकानन्दनाथस्यसद्विनाधीपादुकायूजः  
यामिनमः॥मानसेरूपचावेरस्यर्चनित्यकमानिह्यनार्थ  
आवश्यककरणाथयाया॥॥गतादकभवनादिकंयत्था  
कमृजलादिनालोचविधायस्तानादिकंकृत्वागतखड्गः  
विन्यस्यमूलमकुंदागिरसिआत्मनिजलंनारिषिच्यूनक

चरुं२१सुत्वानिःकलूपात्मानंविहायहीपशुरुट्पाशुप  
ताकुंदासर्वज्ञेयकयित्वाआवम्यकोलजंकुणमूडयागनी  
यावयवामृगीकृत्ययानिमूडयासगिरसिनवाकनीसुत्वाअ  
रिषकंविधाय॥अनूपदुनवाससीपविधायगुडरुसनावाच  
न्दनंनवाशिपूगुनिलकंविधाय॥गयगाशुंसिद्धिलक्ष्मीवि



अहं कालिकायै श्रीमदि, नमो नमो संकषणीयवा दयान् ॥ नूतिनि  
लकं विधाय ॥ ॥ देवयूजास्तानमाया ॥ नमो देवस्तानस्य दक्ष  
शरणमासार्घपात्रमादाय, नक्तवन् नारात् नयूषयूक्तं लनायू  
र्य ॥ ॥ ॐ अथ ह्यादियथा दं ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां ज्ञां ज्ञां सः महामार्क  
छु रं ववा यप्रकाशगकियूक्ता यप्रहना निति तिथि या गनरु

उक्तवन् मूर्तुर्लवानमदिनाय सपनिवानाय सायूषाय सवा  
हनाय अर्घनमः स्वाहा ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां सः महामार्क छु रं ववामू  
र्यं गकियूक्ताय नमः ॥ ॐ ज्ञां ज्ञां नवग्रहं स्वा नमः ॥ ज्ञां ज्ञां  
दित्याय नमः ॥ नवग्रहं स्वाय वं ॥ जय ॥ ॐ ज्ञां ॐ ॥ १० ॥  
स्तोत्र ॥ कालिकलूखकृता नक्षत्रं मूर्तुर्लवानां हसखरुल











य ॥ नानावमूदया ॥ जौं गौं हूं हूं अयसर्वं नु य रूना . य रूनाः  
रू विर्सि ता य रू गा विघ्न क र्ता न रू न न्ध नु नि वा रू या ॥ ॥  
नं जौं गौं हूं सकल न गू य म ध नि हूं हूं अस्मा य रू द ॥ विघ्न निर्न  
नं रा व य ७ ॥ दि गू ज मा न रू ७ ॥ म ॥ ॐ उ क्क ल वा सु पू त्र वा  
य न मः ॥ ३ लीं ॥ उ य रू ना धि य न य रू ना व ना स ना य व ज रू स्त

य न कि यू का य सां ग य स य नि वा ना य न मः ॥ ३ यी अ न य न जाः  
धि य न य म वा स ना य न कि रू स्ता य न मः ॥ ३ यी य मा य य ना धि य  
न य म दि वा स ना य द दु रू स्ता य न मः ॥ ३ यी नै र्ज न य ना रू सा धि  
य न य न ना स ना य रू रू रू स्ता य न मः ॥ ३ यी व रू ल य ज ला धिः  
य न य म क वा स ना य पा न रू स्ता य न मः ॥ रू सा मा य ॥ ३







नवायकौचामु॥ ८ ॥ ३ गं संहानरेववायकौमहालक्ष्मी  
८ ॥ ॥ कौशिकमगनपतिनाथस्ववल्गुहायूकायनमः ॥ २  
कमवदूकनाथस्ववल्गुहासहिगाय २ः ॥ २० कात्रपी ० य २  
ः ॥ २ वृषाकसंकताय २ः ॥ २ सर्वसंहारि २ः ॥ २ महाकन  
वीन ॥ २ गानाय २ः ॥ २ सकलसंहारमहालोककालसन

कंठपालाय २ः ॥ पूर्वदिघानयूर्गयूर्ग ॥ ॥ कौशिकनदिन २ः  
॥ २ महाकालाय २ः ॥ २ हं गिन २ः ॥ २ कालाय २ः ॥ दक्षिण  
॥ २ वृषाया २ः ॥ २ सुन्दाय २ ॥ पश्चिम ॥ २ शीये २ ॥ २ वृष  
य २ ॥ उरुन ॥ २ सुंदरुद्रावकुमार्ये २ः ॥ २ सुंदरुद्रा  
वकुमार्ये २ः ॥ दक्षिण ॥ ॥ तनास्वस्तिमि ॥ ॥ कौशिक



नमः ॥ ३ पत्रमगुनूया २ ॥ ३ पत्रमंष्टिगुनूया २ः ॥  
३ पत्रमाचार्य २ ॥ ३ पूर्वसिद्धिज ॥ ३ आदि सिद्धिज ॥ पूज  
यं ॥ ॥ गमायागाम ॥ हंसः शोः तिलूत याजी वपूत्र व  
उन्नव (भु) निवंग यं ॥ गमा वाम कन गटं सकल कलख क  
पूवर्तु विहा वयद ग्व ला वयं ॥ पूनः इवेंजी गं गदा पत्रय

नमः ॥ द क रु ऊ ॥ ३ व दू काय २ः ॥ वाम रु ऊ ॥ ३ दू नो ये  
२४ ॥ द नो यो ॥ ३ कां कं गु या ला य २ः ॥ वामो यो ॥ ३ पं पत्रमात्म  
नं २४ ॥ हृदि ॥ ग्नां पं गु दूं रुट् ॥ कल सा धनं ॥ वि घ्रा प सा न  
हार्थ ॥ स ग द नाल गु यं कृत्वा ॥ रुट् तिति दि ग्वं धनं कृत्वा ॥  
वं वी ऊ ना मि षा कार व कृत्वा ॥ दी र्घ द्वाद (ग) न वं द मूला धावा दा



वरुणवक्रदधुपयर्कनातिः ॥ धनैकत्वा ॥ हृदिस्त्वजीवयेनः  
 नैस्युद्यमनमाल्मन ॥ हंसः ॥ निर्वृत्तिर्वासंघदृष्टया द्वादश  
 कर्त्तनीत्वाः पत्रकजासिर्स्यात् ॥ अमृतमदकां कृत्वा ॥ पादा  
 दिजानूपयर्कं पृथिवीका पृथिवीजं षष्टिवावमावर्तय ॥  
 जलविलीनसंराग ॥ जान्वाधाधानपयर्कं अमृतत्वर्जं अष्ट

यत्वा विंश ॥ ४ ॥ धानमावर्तय ॥ गजसि विलीनरागं मू  
 लादि द्वादशयार्कं गजतल्वर्कं वीजं षड्विंशतिवाव २५ ॥ वायु  
 विलीनसंरागं हृदयादिकं धानं ॥ अमृतमवायुवीजं २४ अ  
 वभ्रुकाकां विलीनसंरागं कल्पादिषाडधानं ॥ हानिर्वीजं  
 द्वादशवावमावभ्रु स्वकावयेन न्यविलीनसंरागं ॥ स्वदह



किल्बिषं यं १७ ॥ वायुवीजन संख्या वा २४ ॥ अग्निवीजन  
संख्या वं १७ ॥ अमृतावीजन संख्या ॥ रुमिनि पून यो मादिगत्वानि  
सुखवीजयुक्तानि द्वादश संख्या द्विषष्टि संख्यं नैव च यन्मृत्पुनि  
लोभेन सुखकाव एव दूत्य नानि रावयित्वा ॥ पृथिवीजन काटि  
त्यं यामवीजन एवमवका संवत्सरा सुदहमना गलित पापयु

॥ अथ पूष्टि विरायति वात्मकं जीवयेत्तनयसाहसृत्तु नदी  
जीवहं समितिमकुं एखान हत्य द्वांनीत्वा ॥ प्राणपति द्वाकृथा  
७ ॥ मनु ॥ ओं जीं जीं जीं जीं जीं यं नं लं वं गं षं सं हं हं स ४ पत्रमः  
गिवस्य वा द्वा नचक्र ॥ अथ जिह्वा प्राणपाणां लं हाग एव सु  
खं चित्रं निष्ठु सुखा ॥ प्राणपति द्वा जप १० हृदय मूला



यां ॥ ॥ नमो मा ह का न्यास ॥ अस्य श्री मा ह का न्यास मनु स्य  
वक्ता ज वि गायत्री नन्द मा ह का स न स नी द व ता ह ना वी ज  
स न स ग ह न कि द ह गु डो वि नि या ग ॥ ॥ ॐ वक्ता (नमः ४  
॥ नि न सि ॥ ॐ गायत्री नमः ४ ॥ जि का यां ॥ ॐ मा ह का स न स ले न  
मः ॥ ह दि ॥ ॐ ॐ कं खं गं घं ङं ॐ ह द या य नमः ४ ॥ ॐ गु रू या ॥ ॐ

ॐ ॐ मि न स स्ता ह ॥ तर्ज न्या ॥ ॐ ॐ ॐ मि खा ये व व द ॥ म ध म या ॥  
ॐ ॐ क व चा य ह नमः ४ ॥ अ ना मि क या ॥ ॐ ॐ ॐ न तु तु या ये वो  
ष द ॥ क नि ष या ॥ ॐ ॐ यं नं तं वं गं वं स दं कं ॐ ॐ अ स्ता य ह द ॥  
क न सा ध नं ॥ उ र्व ह द या दि ॥ दि य न्ध न ॥ वं ॐ ॐ न्या स्ता धा न ॥  
यं चा ग द रु र ये वि हि न व द न दा या द यू का दि व द्वा द हा र



स्रक् यद्रक लि त न गि क ला मि न्द्रु न्द्रा व दा ग ॥ अरु अ क क  
 रु हि ला लि खि त य नि क ला गि रु र्ण य द्र स र्ण म क्का क ल्या म  
 उ रु रु न ज य न रु रा रा न ती गा न्न मा मि ॥ उ र्व धा ला ॥ अ न  
 न ॥ ल ला ट ॥ आं २ ॥ मुख ॥ ॐ ॐ २ ॥ न जी ॥ उं उं २ ॥ धा ला  
 ॥ अं अं २ ॥ ना सा पू ट या ॥ टं टं २ ॥ ग रु या ॥ वं वं २ ॥ अ ह या

॥ ओं ओं २ ॥ उ र्जा र धा द रु प को ॥ अं २ ॥ मि र ॥ अः २ ॥ मि र  
 अ २ २ र ख ॥ क र्वं मं घं दं द रु वा हो ॥ चं ज वा म वा हो ॥ टं अ  
 द का रो ॥ गं ज वा मा रो ॥ यं रुं पा र्श्व या ॥ वं य रुं ॥ रं ना रो ॥ मं  
 उ द नं ॥ यं ह द यं ॥ वं द का र्ग ॥ लं क रु दि ॥ वं वा मा र्ग ॥ मं  
 रु दां द रु वा हो ॥ मं रु दा दि वा म वा हो ॥ सं रु दा दि द रु पा द ॥

दि १



हं हृदादि वामपाद ॥ लं ज० लं ॥ क्रं मुखं ॥ इति श्री रुका  
न्यास ॥ गतासु कीय वामशाला मायां किं तु रुविम वृत्तं चतु  
त्रयात्मकं मधुलं निर्माय वि का वाम (ध्वजं) कात्र मा पूर्य अ  
मुदय का विगमा धनं तृणं सस्य ॥ ॥ न वक्रि मधुलाय द  
हाकलात्मन नमः ॥ हृदं जं जीर्णं सप कात्य ॥ ३३ ॥ तृणं

सपति स्थाप्य ॥ हं सूर्य मधुलाय दाट ॥ ३३ ॥ कौं कौं उदक मा  
पूर्य ॥ गंगायाम् नृणां दिसादा ॥ जलना पूर्य ॥ संसा ममधु  
लाय दाट ॥ जं जीर्णं कौं वनूदा दवी कौं ॥ मूलनवा कनक संपू  
क ॥ धनू मूजा यानि मूजां पदं मत्स्य मूड या संपू कौं जहात  
जलन पूजा सामग्री दव तास्मानादि कं स्वात्मानं विधेय ७ ॥



गायत्री मन्त्र ॥ ॐ सिद्धि लक्ष्मी विद्महे नव र्याधिक धीमही  
 तन्नो लक्ष्मी यचा दयात ॥ १० ॥ तमा न्या समा नर ॥ ११ ॥ पथ  
 मं मङ्गली न्यास ॥ ॐ कालिका लीं म हा कालिं जीं मी स  
 र्या धित हा जिनी हं न क कृष्ण मूखी देवी ही मां माय धी  
 कु गय व ४० ही हृदय दूनी कालिका देवी थी या दू का ॥ ॐ न

मारु गव निरु र्वा अलिनी गयत्र धिन मां स र्वा कृणी कपा  
 लख द्वां ग धा त्रिणी हन २ द ह २ व म २ प च २ हं ३ अ मूकः  
 मा नय २ ग स २ जां जां हं हं रु द्वा हा ॥ १ ॥ द्वा अली नि  
 व क्ता पा दू का ॥ ॐ अ धा वं जां थ धा नं कुं धा न २ न वं जां जां स  
 र्व नः स र्व स र्वं न म कं नू उ नू प ह्यो गि र्वा स्मानं गी सिद्धि स  
 न २



चन्द्राय पादकां ॥ अंज जोउ र्हा लिया सिमदिया जो सव पूरु वि  
यवदिर्य जो दिलिया सिउ ल खिया जो सर्व दृष्ट दलि खिया थारें  
ल खिका क वर र्हा नं गी पादकां ॥ अंज हूं गु क कू डि क हूं हूं  
न कं म हान कं वा मू (गु ध्वनी) र्हा हाः न क वा मू अ नं ग हान  
पादकां ॥ अंज हूं हूं जो जो हूं सर्वो पदवान् य नु म नु व र्हा प  
हुं हुं

यागमदि कं येन कर्म कात्रि नं क विप्रतिगान् सर्वान् हन २ द  
क्षकवाली जो जो हूं हूं हूं श्री गु क कू डि क अ हूं इति गु क कू  
डि कां र्हा ति उ ग व हूं ॥ ॥ षोडा किनी न्यास ॥ अंज जो जो हूं हूं  
जकिनी मां न क म म ह्व ग्वा नू न व क २ सर्व सत्व च व स क वि  
गी पादकां ॥ गी वा यां ॥ अ नो नो नूं नूं वा किनी मां न क म म व क  
हूं



धगूननरु २ सर्वसत्त्ववर्गविशीपा २ ॥ इति ॥ ७ वां लौहं  
लौहाकिनीमात्रकमममासधगूननरु २ सर्वसत्त्ववर्गकनिः  
शी ३ ॥ नारो ॥ ७ कां कां कूं कूं काकिनीमात्रकमममदाध  
गूननरु २ सर्वसत्त्ववर्गकनिः शी ३ ॥ निः ॥ ७ सां सिं सूं  
सां साकिनीमात्रकमममजुहि धगूननरु २ सर्व १० ॥ ७ ॥ ७

हौं हिं हूं हूं हाकिनीमात्रकमममजुहि धगूननरु २ सर्व १० ॥ ७  
म ॥ ७ यां यौं यूं यूं याकिनीमात्रकमममजुहि धगूननरु  
२ सर्व १० ॥ सदुदलं ॥ ७ वक्रं वक्रं ॥ ॥ न गो अरुमा ह का  
न्यास ॥ ७ प्रयागकं गुं अं अं सिं गं गं रं वं वं अं वं मां वां अं वां  
शीपाइकां ॥ गिरसि ॥ ७ वा वा ल सी कं कं नृ नृ रं वं वं कां मं



हृद्यत्रीशी ३॥ वदन ॥ ॐ का ना गि त्री कृणु च चतु रे न व चाः  
कामा। त्रीशी ३॥ कर्तु ॥ ॐ अ ह हा सम हा कृणु टं का ध रे न वा  
य र्वा ना ना य मीशी ३॥ हृदय ॥ ॐ अ य नी कृणु मंड न्म ल रे न  
वा ना वा ना हीशी ३॥ ना ही ॥ ॐ वा त्रि नु कं यं पं क पा ली रे न व  
यां ग का मीशी ३॥ सु धि क्त न ॥ ॐ ए का मुं कृणु यं ही घ व  
का

रे न व यां वा मू अशी ३॥ आ धा वं ॥ ॐ द वी का ट कृणु मं स द  
न रे न व मं म हा ल श्रीशी ३॥ पा द या ॥ ॥ ॐ ति अ ए मा ल  
का न्या स ॥ ॥ ॐ मूल दं वा नू पं द व कृता वं नू क्त म वि ष्णु रा  
व प वं द नू ड रा वं प वि क ल्प मं ॥ ॐ ह्या त्मा ना मूर्ति नू त्पा  
य त्ता य व मा न न्द मा त्मा नं पू र कं ना मी यं कू र कं न ह दि निः



याञ्छ ॥ ॥ धाटा न्यास कृष्णम् ॥ गता दो ॥ जौं गौं श्री नाथ पादूक  
॥ वक्रनीधु ॥ जौं गौं म हल श्री जूम्बा ३ ॥ विन्दू दं ॥ ॥ श्याम  
वामा मंघ्र वीर्ज वा ३ ॥ वाम नयं ॥ २ खं च वीर्ज वा ३ ॥ वाम नाः  
भा वूट ॥ २ दिग्वीर्ज वा ३ ॥ वक्रं ॥ २ गम च वीर्ज वा ३ ॥ दक्ष  
ना ॥ २ ह्र च वीर्ज वा ३ ॥ दक्ष नयं ॥ ॥ ॐ निपुथमवामक्रम

॥ ॥ अथ कूल न्यास ॥ जौं गौं ख ॥ रुदि ॥ २ रु ॥ कल ॥ २ व ॥  
गात्र ॥ २ व ३ ॥ ऊर्वो ॥ २ म ल कू (ग ध) ॥ ॐ निवी मयं चर्क ॥ ॥  
खुं ३ ॥ ऊर्म (ध) ॥ जौं गौं नमः सर्व सिद्धि मा हृत्था ३ ॥ हृदय ॥  
जौं गौं नमानि त्वादिता नम नायै ३ ॥ नाशो ॥ २ सकल कूल चक्र  
नायि कार्ये ३ ॥ गुह्यं ॥ २ रु वै गे ह्ये च लु कालि न्ये ३ ॥ गुह्यं ॥ २ न



३॥ नारो ॥ यं ॥ हृदि ३ ॥ २॥ थ ॥ दाद मा ॥ ३ ॥ प्रथम मा ॥  
३॥ ॥ ३ ॥ वाम न ॥ ३ ॥ ३ ॥ द ॥ न ॥  
३ ॥ ॥ वाम ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ वाम ना भायू ॥  
३ ॥ ३ ॥ द ॥ ना भायू ॥ ३ ॥ नं व ॥ ३ ॥ मं गि खा या ॥ ३ ॥ आ ग या ॥  
दि ती य ख ॥ ॥ ॥ य न म हं सि नि ३ ॥ व क्त न ॥ नि च

त मा र्ज द ३ ॥ ना भा ॥ विष मा य प्र व य ग मि नि ३ ॥ गाल ॥  
स क ल इ वि ष क्ले ण द ल नि ॥ ह नो ॥ स र्व य दा रा धि न त नि  
॥ ॥ ॥ स क ल ग पु ष म म नि ॥ व क्ति ॥ द वि ज्ञा ग क्त ३ ॥  
ह द य ॥ ह स ह स ॥ ना रो ॥ व ल ग ॥ ह द य ॥ न न त्र धि नाः  
मा व गी र क वि ॥ कं द ॥ म म स्व ग गू न्म र्द म र्द ॥ गि य ॥ ॥ ॥



हि २ ॥ र ॥ ग ॥ वि मूल हि नि ॥ अथ या ॥ ४ ॥ चि नि २ ॥ गु ॥ क ॥ ख  
 अन मा उं गा उ य ॥ ३ ॥ द य २ ॥ पा दा गु द या ॥ प न स का नू दि  
 कं ॥ आ न ॥ र ग वा नि म हा र व व नू प धा वि णी ॥ ३ ॥ उ र्वा ॥ वि द  
 ण व न न मि नं ॥ गु ॥ क ॥ स क ल म नु मा न ॥ ना री ॥ य ण न ज  
 न व त्स ल ॥ ह दि ॥ द वि म हा का लि ॥ क षू कू प ॥ काल ना मि

नि ॥ व क ॥ हूं हूं हूं य मी द म द ना यु री ॥ र ॥ ग ॥ ॥ कू नू २ ॥ न य  
 ॥ सू ना सू न क न्य का ॥ मि न ॥ हूं मि य नि द नं क ॥ ॥ जो ॥ उ र्वा  
 ॥ ॥ जो ॥ वि न्दी ॥ हूं ॥ व क ॥ हूं हूं हूं ह दि ॥ हूं हूं ॥ ष ठा धा न ॥  
 हूं ना री ॥ स्वा ॥ लिं ग ॥ हा ॥ यु री ॥ ॥ ति द यु क म न वी ने  
 क न या स ॥ ॥ खु न मः सर्व सि धि या गि नी या उ द व क ना थ



श्री पादुका ॥ खुं नमः सर्व सिद्धि मा हृत्पूः पूर्व ८ ॥ खुं नमानिख  
दिमानन्दमन्दिताये दक्षिण ८ ॥ खुं सकल कूल चक्र नायिका  
श्री उरुवर ८ ॥ खुं रुगवत्सेयुका पालिनी पश्चिम ८ ॥ ॐ नि  
यं च वक्तव्याम् ॥ ॥ खुं यत्र महसिनी सर्वज्ञा नागकि दयना  
थ श्री पादुका ॥ खुं निर्वाणमार्गद नित्य नृपिनाग कि गिनन

नाथ ४ ॥ खुं विषमाप प्रवपु गमनि अनाधिवाधा नाकि गिख  
नाथ ४ ॥ खुं सकल द्रविता निष्कृष्ट गदलनी सननु नाग कि  
कवच नाथ ४ ॥ खुं सर्वाय दांशा धि नय नि अलूफ नाग कि  
नय नाथ ४ ॥ खुं सकल नयुप गमनि अन नाग कि नाथ ४ ॥  
ॐ निमडग ॥ ॥ देवी आगच्छ स्ववद नाथ श्री पादुका ॥ ह







मुलं ॥ मञ्जालिनी ॥ पादया ॥ महाकालि ॥ अंघाया ॥ कामना  
जि ॥ उवा ॥ विविज्जुधि ॥ पार्ष्ण ॥ अश्लिष्टु ॥ कर्नागुलीषू  
॥ यवमन्त्रि ॥ कवी ॥ शायदुन्त्रि ॥ बाहो ॥ येहिरेनि ॥ सुध ॥  
मनायकर्मवि ॥ क ६४ ॥ ताहिपत्तगिरं ॥ मुखगंठ ॥ वयस  
ऊनं ॥ शुं पृष्ठवर्ग ॥ जीकथा ॥ हं आभारं ॥ जीखाधिसुनं

॥ रुं मविपूत्रं ॥ कौं अनादुनं ॥ कौं विगुधो ॥ नः आह्लाह्ला नं ॥  
मः नानाद्य ॥ ॥ तिरुगीयसूत्रन्यास ॥ ॥ अनननयवदद  
यासः ॥ अनादुनं ॥ मः तालुनि ॥ हाः विन्तो ॥ वः अर्धचन्द्र ॥ उ  
॥ नाउ ॥ थाः निराधिकार्य ॥ एगः बापिन्य ॥ ग्वाः समनार्या ॥ ॥  
कलकल ॥ रुट् मनामन्या ॥ रुं उन्नया ॥ रुट् गामुवानं ॥



जोंही पाउ गानक ॥ वीपन का सुटू कूल ॥ ॐ तिकमं दपन्यास  
॥ ॥ खुं वक्रन ॥ सुटू लकू (गेष) ॥ मः ना माय ॥ जा विन्दी  
॥ यः ना सी ॥ उ वामक ॥ यो दक कर्तु ॥ एग वामनं ॥ ध द  
कनं ॥ वि वामना मा पूट ॥ सुटू दकना मा पूट ॥ खुं वामन  
नं ॥ दों वक्र ॥ सुटू जि का यां ॥ नुं दक ॥ सुटू सिखायां ॥ ॐ

निमूलकमधपन्यास धुर्थ ॥ ॥ खुं जोंही उ म्वन नाथ वक्रा  
यनी जू म्मा पाद ॥ ल कू (गेष) ॥ ३ कमला रु वनाथ मा हं ग्वनी ४  
॥ वक्र ॥ ३ गगन नाथ की मानी ४ ॥ ३ र्गु नाथ वैष्णवी ४ ॥ मंद  
सि ॥ ३ नीला म्वन नाथ वाना हि ४ ॥ अस्मिनी ॥ ३ सन नाथ नन्द  
ली ४ ॥ स्नायी ॥ ३ खं वन नाथ वामु ४ ॥ मऊया ॥ ३ सधाय (ग)



स्वविनाथमहालक्ष्मी ४ ॥ वग्मायी ॥ ॐ नित्यं यत्कर्म न्यासस्य च  
मः ॥ ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ अजितनाथपाद ॥ सर्वपाद ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ अन  
न्दाद्या ३ ॥ वामपाद ॥ ॐ ह्रीं सः ॥ नूपा नाथ ३ ॥ दक्षजय ॥ ३ ॐ  
स्ववीणा ३ ॥ वामजय ॥ ३ ॐ दयनाथ ३ ॥ दक्षीण ॥ ३ ॐ उग्रमः  
मिनीश्वर ३ ॥ वामात्री ॥ ३ ॐ मन्दिनाथ ३ ॥ दक्षपा ॥ ३ ॐ सगिअ

द्या ३ ॥ वामपा ॥ ३ ॐ लूफदवनाथ ३ ॥ दक्षकन ॥ ३ ॐ लू  
नाथ ३ ॥ वामकन ॥ ३ ॐ कांगनाथ ३ ॥ दक्षवाही ॥ ३ ॐ न  
वनीया ३ ॥ वामवाही ॥ ३ ॐ पापनाशननाथ ३ ॥ दक्षरु ॥ ३ ॐ  
३ ॐ कनाला ३ ॥ वामरु ॥ ३ ॐ मन्वनाथ ३ ॥ कक्षदि  
॥ ३ ॐ कक्षनूश्वर ३ ॥ रुदि ॥ ॥ ॐ निधाया न्याससमा







एव कुं २॥ हूं स्वर्गं ६ नाउ य २ हूं दय २॥ कनातिव कुंद कि  
६॥ २॥ हूं ताव था व नमस् कलम नान था न्नाध य रा व ना व  
कुंड रु २॥ २॥ हूं य नम का नू ति करु ग व नि म हा रै न व नू  
प धा वि वि उ रु न व कु का ला न रा या इ क था न म ४॥ हूं ए द ग व  
न न मि ग स् क ल म नु मा न की ला रु न व कु द कि ६॥ २॥ हूं ५

एव जन व क्त त द वी म हा ल क ट व कु उ रु न था २॥ नमः म हाः  
कालि काल ना मि नि रु क्ता न व कु द कि ६॥ २॥ हूं हूं हूं हूं ५ः  
सी द म द ना यु ना कू २ २ सू ना सू न क र्ति काम क र्त्त द कि ए व कुं  
२॥ २॥ हूं मि व कुं न्या स ॥ ॥ हूं य न म हूं सि नि नि र्वा ण मा र्ग द ह  
द या य न मः ॥ हूं वि ष मा य प्र व प्र ग म नि मि न रं स्था हा ॥ हूं स



कलद्रविना विष्णुं दललिनिखाये वोषट् ॥ कौ सर्वप  
दांशो धिगत्रा वि कवचाय हुं ॥ हुं सर्वगं यमथ निनेय  
याय वषट् ॥ कौ कौ नमः आ गच्छ २ हस २ वल्लन न नू धि  
वा कुव सा र क वि जू कु य रु द् ॥ उं नमः सर्व सिद्धि मा गिनी  
र्या ॥ वक्र न ॥ नमः सर्व सिद्धि मा रु र्या ॥ वक्र म लु लो ॥ न

नानि त्यादि तान नन्द नन्दि नाये ॥ घं गि का ह्व न ॥ सकल कल  
त्रक नायि काये ॥ क ठ कू पे ॥ त ग व र्णे त लु का या लि नो ग य था  
॥ द क्रि त रु ऊं ॥ उं कौ हुं हूं हुं कौ कौ नमः ॥ वा म रु ऊं ॥ हुं य व  
म हं सि नि नि र्वा ण मा र्ज दे ॥ ह द थ ॥ वि ष भा य प्र व ण म नि ॥  
द रु पा र्ध ॥ सकल द्रविना विष्णुं दलनि ॥ वा म पा र्ध ॥



किं हर्जं घायं ॥ रुग्णवनिमहाश्वेन वनूपध्वनिधी ॥ वामर्जं घा  
 यं ॥ हृदयवचनमिह संकलमनुमात ॥ दक्षगुरुं ॥ पुनत  
 जनवत्सलं देवि ॥ वामगुरुं ॥ महाकालिकालनामिनि ॥ द  
 क्षपाद ॥ हूं हूं हूं प्रसीदमबनाशुर्वा ॥ वामपाद ॥ ओं कूं २  
 सूनासूनकन्यकां ॥ दक्षपादगतं ॥ ओं गूं हूं हूं हूं हूं ॥ वामः



कठुनाथपाइकां॥३॥गंकनाथ॥३॥विद्याम्बा॥३॥कर्मनाथ॥३॥  
मंगलाम्बा॥३॥मद्यनाथ॥३॥कमलाम्बा॥३॥महेश्वरनाथ॥३॥काक  
नाम्बा॥३॥विगतनाथ॥३॥गवनीश्वरम्बा॥३॥गुप्तानाथ॥३॥पनमगुप्ता  
नाथ॥३॥पनमसिगुप्तानाथ॥३॥पनमाचार्यगुप्तानाथ॥३॥पूर्वाचार्य  
गुप्तानाथ॥३॥आदिसिद्धिगुप्तानाथ॥३॥वर्षाजयित्वा॥मूडापर्व



कैषदर्मय ७ ॥ ॥ अथाकर्माग ॥ रुदयञ्जु (म) मुखस्तिर्गमस्या  
पानपत्रसंकाचननउर्द्धसंमुखीकनर्ध ॥ कर्माजातगृष्टपः  
स्तिर्ग (म) तपत्रकलुिकाया मूयत्रिआ (म) नाधर्मघटयनूषज  
नलकैचकधाय ॥ गइयत्रिरुगवगीमनसाचिकय ७ ॥ नाक्रम  
दमू (म) इकंदनृहृहृहृनालवायकासस्मनमनीची ॥ विविपट

ख ३

लहत्रिचन्दनसूनवर्ष ॥ नूडस्यापनिवजपंचकयूनां गूलासिमू  
र्धकैसिवापाणकृपावयागककलनवामाप्रसादारुया ॥ पू  
र्णदुयूनिर्धकैन्दधवलारख (म) नूयूकाजियां नैर्णः पचै  
द (म) विनाजितपनां वक्रात्ति कौसुन्दनी ॥ नूडस्यापनिव  
कृपंचकधुनां गूलासि नंगा कूर्गखेर्वागचैरुपाययाग



कलगी हरेः प्रसादादहं ॥ उगदूपं रुगवर्गि हसया वि  
विनये ॥ ॥ पत्रवाक्षमृताक्षना प्रोधयेनासिद्धय उ  
तादृशी पविवात्री वरुमान कृष्णयागवत्सना सा पूजयन्  
॥ ॥ यथा मानसेः पूषादिना नाधूपदीपने वंशादिवन्द्य  
नाकन पूषादि कया सिद्धे लाकरामनीयानीतानी मानसेः

कैसं त्ययित्वा ॥ ॥ यथिवावमती वायू आदित्याग्निवृक्षमा  
यजमानश्चरुतात्मा पूषान्यक्षीय कीर्तिताः मानसेः पू  
जसा मिका साद्य रुषदा ॥ अनिर्मात्या वयाद्युद्धाभाकदाः  
सिद्धिदानुत्तमा गमकं यपनमानन्द तथा नूयन किलिष ॥  
तनयूनि न निमात्मानमनने वंशमूलम ॥ अनकवत्सात्मा



नं सकल गति मयं रावयन् ॥ अथानपद्यसं कावनं गूढं  
दीपगिरि कर्मा कन्द्यु वना इहिनं ध्यात्वा नादसमर्थनं न  
षड्भक्तं दत्तपत्रं यामुपदय दंष्ट्र ध्याय ॥ ॐ तिग ह्युक्त  
नविधिः ॥ गच्छन्तं मनमानसजयं कुर्यात् रुद्वे निवदय  
७ ॥ ॥ ततो मानसं ह्यमश्रयं वक्नुवन्तं तजो निरुमात्मा

दक्षिणमथोऽवसमिधः अरुगान्त्रिणाः मदमं वाक् ॥  
सामसूर्यमथोऽवोऽति कर्म ॥ ॥ ततो आत्मयुजा वाहकम्  
नं नानृतीं मूढा वधात्मयुजां कुर्यात् ॥ यादधमासर्न ॥ निव  
सि विद्याय वक्तुं न्यासक ॥ ॥ ततो मूलपीपाय युजा व  
मुमाचय ॥ ॥ सामानाघसं हि नजलं न्यामनार्यान्मध्यम



ना ॥ रुविम्वरुषकादात्रिकासा कि नञ्कनवलिखित्वा ॥ श्री  
ह्रीं ॥ मधुललिखित्वा ॥ गीखमूजयादकिदाहसुमाहृक  
मंलकाकावमध्विलिखित्वा रुविम्व ॥ वक्रा ॥ हृदये ॥ श्रीगोः  
न ॥ गिवा ॥ रात्रिचन ॥ गिरा ॥ वाये ॥ वर्म ॥ पूवता ॥ नेत्रं  
वउर्दिहृवाहु ॥ न्निमउद्ग ॥ ॥ ३ सर्वमन्त्रासनायनमः ॥

उं कामनूपपीभयनमः ॥ ह्रीं पूरुगिनिपीभयनमः ॥ श्रीं जा  
लधनपीभय २१ ॥ उं जीं ड्यानपीभयनमः ॥ ॥ जून्मन्त्र  
दाकात्रिगपादकापय ॥ ह्रीं जीं सिद्धिमहात्मज्ञाधन  
साधयामिनमः ॥ ह्रीं जीं नानात्रुं धर्मपददलकलान्ननेत्र  
निमगुलायजूर्धपागसनाय नूनमः ॥ न्तिज्ञाधनपूजयि



त्वा तद्रूपनिषदकिं ह्यन ॥ जौं धौ धूम्राच्च कलाधीपादूकां पूज  
 यामि ॥ २ नैनीलनका कलाधीपायू ॥ २ लंकपिला कलाधीपायू ॥  
 २ वैश्वलिमिनी कलाधीपायू ॥ २ संहयवाहिनी कलाधीपायू  
 ॥ २ नैनीली कलाधीपायू ॥ २ कंसं दानिधी कलाधीपायू ॥ २ वंसं पू  
 ज्वा तद्रूपनिषावर्धुमासुकां ग्यविष्णुमित्रकाद्यं नो यवा पात्रम

कमादाय अरुमकुंटाप्रकाश ॥ २ जौं धौ सिद्धिमहात्मनीर्जवा  
 अर्घपायुष्मापयामिनमः ॥ २ निषागसंस्कारा ॥ २ जौं धौ जौं  
 जौं हूं जौं वसुषदद्यादङ्कलात्मनं सूर्यमधुनाय अर्घपायु  
 यन ॥ २ मः ॥ ॥ तद्रूपनिषदकिं ह्यन ॥ जौं धौ कं हं न  
 पिनी कलाधीपायू ॥ २ सर्वं श्रमनी कलाधीपायू ॥ २ गं हं ह्यदि







नी १

दत्त्वा नवाकरं गच्छ पादं विहाय ॥ जंजीरां सांसां सुं सुं  
संकोमपद घातं कलात्मनं सोममद्य जयजुर्घामृताय  
यनमः ॥ तद्वयनि ॥ जंजीरां जंजीरमृत् कलायी पादकां पूज  
यामि ॥ श्रुं मानसी ॥ ॐ ह्रि ॥ २० पूष्टि ॥ २३ पीति ॥ २४  
ववती ॥ अंजी कला ॥ अंजी कला ॥ २६ कालि ॥ २७ सुधा ॥

२८ अस्त्रा ॥ २९ दनवती ॥ ३० अंजाया ॥ ३१ संपूर्ण ॥ ३२ अं  
वामय ॥ ३३ अंभा कलाययी ॥ ३४ तना ॥ ३५ सकलगुप  
मनि हूं हूं अंजाय रुद्र ॥ चतुर्दिक् चटिकं दत्त्वा ॥ मूल  
जुमृत् मूडया विलाय ॥ चतुर्दिक् ॥ जंजीरां सुंगगघावत्ता  
यनमः ॥ ३६ स्वर्गवत्ताय २ः ॥ ३७ मर्त्यवत्ताय २ः ॥ ३८ प



धावय २ सो सुधा मुकुटा पद्म सय २ चतु न त्रयि न सिद्धि सा  
 मर्थं दद २ म हा खं च ली मूदा य क ट य २ हूं स्वा हा ॥ जौं जौं जौं  
 अमृ नं अमृ ना रु वं अमृ न व र्षि णी म हा य का ण यू कं स्वा हा ॥  
 ॐ ह्र मृ नं ध्व वां वि वा नं ऊ ह्रा ॥ जौं जौं अखं लु क ल सा न न्द ति  
 ॥ हूं ॐ आ न न्द रे न वा य वो ष ट् ॥ ॐ आ न न्द रे न वं सु धा द वी नः



दिन्द्रसिन्धवगर्भयित्वा॥ अकलस्यामृताकालं सिद्धिज्ञानक  
नयनममृतामृतनिधेकस्मिन्चक्रुर्निकृन्तयिष्ये॥ ॥ पुन  
नर्वात्मा मिथूननयस्यार्द्रहृत्तान्दशैववायवषट्संलक्ष्मद  
वीवषट्कतद्रूपिकनसंनित्वा॥ गंगागणअर्घपात्रद विविचिः  
न्यगणैवस्तनगर्भय ७॥ गणवद्रुक्कवक्काद्यादि॥ मूलस्वामिनी

यर्ष्यतगर्भय ७॥ आदि स्तंमहासुष्टिचतुलक्षीसिद्धिमात्रीरुं  
द्र॥ १॥ तनगर्भय ॥ ॥ पुनर्नवाकर्षानवधतर्भय ॥ गुत्रपात्र  
द्वयनपूर्यअर्घपात्ररुद्रयविन्दुगर्भयदत्ता॥ तनस्वामिनसिगुत्र  
पार्थयर्षसिद्धिदियमानवाद्यादिकसंतर्भयतदर्घपात्रगुत्रवः  
द्य॥ मद्रूपैकलक्ष्मीनीत्वा तत्स्वरूपिणीमृत्वायनामृताकनाका



नमो मविष्णु नर्तक लपूत मूल नमो फधा रिमनु अशुं एमं न  
क कवशा नावशुं ॥ धनू मू डाय दग्ध ॥ ॐ ति मूला घषा न  
पूजा विधि ॥ ॥ नमो पी ० पूजना ॥ ॥ दशवर्ति य ॥ ०७ ॥ ॐ न  
मः सिद्धि म का कालि कार्य ॥ ॐ ला कार्य नमः ॥ गि शु व न न मि  
त कालि विधि ॥ ॥ ॐ वामं वा मा न न लु सि द ग व न नू न नो मि न

पाद पू ॥ ॥ ॐ स्व दी र्घ विष् ॥ ॐ अ क च ट न प य ॥ ॐ क य का  
गा क न लु मू ॥ ॐ हं विष् व नू य न मि प न व न द ॥ ॐ घ ना ॥ ॐ  
रु नी य ॥ ॥ ॥ व द्वा कौ क लु पू नो न न न न न लु जा हि मा  
को ट ना कि ॥ ॐ व द्वा म थ नो ड कालि ना नि सि नि सि नि सि  
न मा रु न न द ॥ स्वा हा का ल वि नि कि ष म न ऊ न हि म व्या धि



सुन्दरु ना (ग) कं कालं काल कालं कालि कलूष रुने स कवा  
माय धानं ॥ २ ॥ नू वकु मूख नू यं म मे व व नि व नं क न्द व क्त द  
न हं या म ह स्मा म वा द रु न रु वि म मं हू ट य य न वा ह । रं  
रु हा गि जि कं गे ग ग ग व नं का न गि श्वा धि वा स वि श्व  
वि ल्ब ग्व नी यं म थ म थ म थ नं दूः रु गा घा नि द वी ॥ ३ ॥ डां

डां डां डां वि नी यं कि लि कि लि न रु मं च मा म (गु) प्र हा नं कौं प्रुं  
नं न ल्वा द कि लि कि लि मू र्ग म रु वि श्वा व ग म द । यं यं यं  
य न वा द क ल क ल क द नं या ग क हा नि का (गु) दि वा धि वा  
स ख ख ख ख ख ग मं घ र्घ ना वा व धानं ॥ ४ ॥ कौं रु द रुं रु  
दू स नू य उ उ उ उ उ म नं कूं ज य श्वा धि वा स वि क्ति न्मा सु न



वाम ००००० मयं कुरु का न सुखी म । लाव न काठ ना कि व  
न व न द म न द क का ना क नी यं रु ह हूं का न ना वं य च य चः  
द ह न मूं च मूं च य य न ॥ ७ ॥ च अ कि का ध नू यं द न द न य न  
म म नू ना पा म ला लं वी न वी ना नि वा म म धू म द न र मं ह्याः  
लि नी का लि रा सा च ॥ ८ ॥ का य नू यं घू नि घू नि ग घू ना घा न नू

प र उ धं रु ह रु ह रु ला न नू यं क रु क रु न म वि यं ग र सा प  
लि फं ॥ ९ ॥ मा रि का का न नू यं क रु क रु न स नं रु ह कं का न वी  
॥ १० ॥ कां कां हूं का ध नू यं रु ह रु ह रु ह स नो मि च अ सि धा न रु ला  
व न्द सर्व का लं न न पि मि त मू खी सा च नि ग धि वा म रु ह रु ह का  
न न ल ल ल ल ल ल न कं द रु का न नू यं ॥ ११ ॥ जं जं जं जं म नी



यववववववदधानदूकानवदंग नानेनानाकदाभजय  
जयपदककाठिकलुधिवाभं । यावीवावीववंशाभपिग  
मनयमायागयी (०) पयी ० । उल्लंनस्यनित्यं वितवव  
नगुरुकासवृषावनीर्तु ॥ ८ ॥ नाश्राक्यावलीयं प० न  
गुरुयर्गमनुसिंहं पलीता दिवादिवा दिविघ्राप्ररवमि

दुरुवनेवदवीपरावाकू ॥ ॥ निवीसिद्धिलक्ष्मीमनुप  
का (०) जयदस्यविद्यायी (०) पलंगीयार्क्यावलि पी० रु  
वसुमाफं ॥ ॥ नागोसुखाविमल्लेखनलक्ष्मीकनवीननामः  
भभानंनौनकपुष्पलगाकूलकूकाकिलपिकवाचालविट  
विगहनंजागीचमकपूनागयातनाग्र (०) मसुगंधसुमनोशिः



लंछनमममनां कलंकलकलाकलं मलयपवनप्रवर्णीन  
लगाजालनन्दनाशनं तदनं गतिदादित्यसंकाशं स्वर्ण  
कावचं किं गं सनातनसदा नंदं गं कृष्णयुग्मं पाशादागादा नम  
प्रतक कं रं स वं स नूखानं क काठिदेव नासं स वि नं दि व म धु  
यं ध्यात्वा ॥ नमः ॥ ध्ये म म कालसमूदि न म ह स ह वि ए म धु ल स

काशप्रवर्णं रचयुर्दयं सदा प्रित न न पद ॥ ध्ये न मूकामय वि  
ना न व वी क र्ण न स क ल ग जि न गंध व र्णि का व र्णि न दी पां कू  
नी कि न का ल द ध न क सिं हा स ना पि नि ॥ ध्ये न क म लं ध्यात्वा ॥ द  
व्या म ना न रं द व र्णु द ह प द द ह न्या स स न ॥ ॥ ॐ नमः ॥  
सिद्ध या गि नी णा पूर्व व कु न्या स ॥ ॥ नमः ॥ सर्व सिद्धि मा रू णा ॥



दक्षिणवर्कुं न्यासः ॥ १ ॥ नमानि त्वादि तानन्य नन्दिनाथे ॥  
उरुनवकुं न्यासः ॥ २ ॥ सकल कुलवक्त्रनाथिकाथे ॥ पश्चि  
मवर्कुं न्यासः ॥ ४ ॥ रगवत्ते वलुकाया निने ॥ उर्ध्ववर्कुं  
न्यासः ॥ ५ ॥ ॥ मां कुम्भधृष्टिदि ॥ धां ताशो ॥ ६  
दक्ष न्यासः ॥ ७ ॥ मुख ॥ जां वामनाभापूठ ॥ हूं दक्षना

भापूठ ॥ हां वामनकुं ॥ हूं दक्षनकुं ॥ हां वामकर्ण  
॥ हां दक्षकर्ण ॥ नः निर्ग ॥ मः युक्त ॥ ८ ॥ तिष्ठानन्या  
सः ॥ ९ ॥ पवनमहं सिन्धु ॥ ने द्वादि मार्गद ॥ निवसि ॥ वि  
षमाय प्रवयुगमनि ॥ निखायां ॥ सकल दूनि ॥ ना  
विष्कृन्दलनि ॥ कवच ॥ सर्वापदा भूधि नववि ॥ न



जुंम ॥ सकल मङ्गल मथनि ॥ दिग्विजय ॥ अमु ॥ ॐ नमो  
जुंम न्यास ॥ ॥ देवी ॥ देवी आगच्छ ॥ दद्याः सकावायः  
आकाशं स्वर्गं वीर्यं गन्तव्यं कर्म विविच्य ॥ सुहास हः स्वा  
त्मनि अमृतं रूपं विविच्य ॥ नमः वृद्धिवाक्यं वसुधैव कुटुम्बकम्  
कपालं विविच्य ॥ दक्ष हस्तं ॥ मम स्वर्गं मुनिर्दत्त ॥ स्वादि ॥

स्वर्गांग विविच्य ॥ वाम हस्तं ॥ विष्णु लक्षणं विविच्य ॥ विष्णु लं वि  
विच्य ॥ विधि ॥ स्वर्गं नास्वर्गं विविच्य ॥ नाउय ॥ पाञ्च  
विच्य ॥ ॥ दक्ष ॥ अङ्गुली विविच्य ॥ द ॥ नावद्या वन्ममस  
सकल मन्त्रान्मन्त्राध्याय ॥ वनद हस्तं विविच्य ॥ ॥ पत्र  
मकात्रुलिक ॥ अङ्गुली विविच्य ॥ वाम ॥ हगवति



महोत्तरेववद्रूपधात्रिमि ॥ ननमूर्तुं विविचय ७ ॥ विदम  
वननमिमं सु कलमकुमातः ॥ धं ता विविचय ७ ॥ ॐ  
तिकनायूधदगकन्यास ॥ ॥ एतताजनवसुलपनं विविः  
नय ७ ॥ ॐ मित्रासनन्यास ॥ देवीमहाकालिकालनासिनी ॥ अ  
मूलायां ॥ ककुलिनीतूयाया ॥ दयाविविचय ७ ॥ ॐ ॥ जन्माधन

देवीउदयविचय ७ ॥ ॐ ॥ ककुलिनीतूयाया ॥ दया ४ विविचय ७  
ददययर्थनं ॥ ॐ ॥ ददयादिद्वयर्थनं ॥ ॐ ॐ ॥ विदमान  
वसुनयुयर्थनं ॥ एसीदमदनागुनां कुरु २ सुनासुनकन्यकां ॥  
जननविश्ववगकात्रसाधयुक्तं ॥ ॐ जन्माधन ॥ श्रीं लिं ॥ ॐ क  
मूलाय ॥ ॐ नासिनी ॥ हृददय ॥ हृदक ७ ॥ हृदमुख ॥ ॐ



विरहान्न ॥ जां वुव म न्य ॥ ॐ निमधनादिवर्धुनवक न्यासवि  
 धिं कृत्वा ॥ ॐ निमकुदह ॥ ॥ गतावर्धुदह ॥ सुद सुटिकसं  
 का मां य चासंदधवा कृकां । महानूजासना नूटां । सुदहावर्धुवि  
 यहा ॥ नीलकृक्कि त ध ग नू । जटामूकटमछि नां । नाना रत्नमहा  
 हान् । काशमछि त (धषत्रां) ॥ मि त (आनासिगात्र का) (धनवादित्र

शु

मूकाला । नाना रत्नसमायुक्तां । सुमहिसूकृधुलां ॥ सूर्यविभूत्र  
 लका नां । प्रियच्छनयेना काला ॥ ॐ वप्रासल लज्जि कां । उरुसा  
 रिमूखा काला ॥ नाना देसादि सुदह । क (ध) कन्दलमालिनी । अ  
 नकत्रल निर्माव । हान घृक्ष नन रुनी ॥ प्रिवली नन ग (आ) रा  
 धां । म (ध) द मां दनां युगा । कि कि धी जाल सुदह । धा धां यु कटि



रूपं ॥ वनाशिखरवाद्यं ॥ मृदुदक्षकनकं ॥ अलीखदसि  
त्योय पागंधभागधारुणं ॥ वीनघंतामुकासुत्रं ॥ जानुशमसु  
भासिनी ॥ घघनात्रपूना ॥ सुविनं वनद्वयं ॥ सुलवतस्य वि  
नयस्य ॥ द्विजुजं क मूर्यस्य ॥ सुधनूदस्य वा नूरा वीना  
सन ॥ द्विगस्य ॥ कलत्यावकं सैकागं ॥ कालासमूहसंघ

कं ॥ वीमकूपाच्चनिर्घातं ॥ गगनं वातूलापमं ॥ माण्डुक  
स्य मध्यास्था ॥ पंचास्यं काष्ठस्य ॥ चिनां ॥ वक्रसिद्धसमाकीर्तु  
सिद्धया ॥ गिनी वूजिनं ॥ माण्डुकाष्टकमध्यास्था ॥ पंडा कि  
निपत्रिवृतां ॥ उर्वध्वनं ॥ ॥ तमापनदं दं न्यासः ॥  
उं नमः ॥ गिवधं ॥ सर्वसिद्धिया गिनी न्यासः ॥ ललाटं



नटमल्लं ॥ सर्वसिद्धिमाह्वयानमः ॥ नाना ॥ निखा  
दिगानन्दनदिनाये ॥ वामनं ॥ सकलकूलचक्रनायि  
काये ॥ दक्षनं ॥ रगवले ॥ रुनं ॥ चक्रकापालिनी  
वामगले ॥ तद्यथा ॥ दक्षगले ॥ वक्रगले ॥ ॐ वाम  
कले ॥ ॐ दक्षकले ॥ ॐ अथवा ॥ ॐ उर्ध्व ॥ ॐ अ

ध्व ॥ ॐ उर्ध्वदक्ष ॥ ॐ जिह्वायां ॥ नमः ॥ मुखं ॥ वि  
ष्णुकले ॥ खले ॥ ॐ पद्ममहसिनि ॥ कले ॥ निर्वर्णमार्ग  
दं ॥ वामकले ॥ विषमापक्षवपुर्गमनि ॥ वामबाहो ॥ स  
कलद्रुतिताविष्णुर्गदलनि ॥ वाममणिवन्ध ॥ सर्वाप  
दांशधिपति ॥ वामहस्तगुलि ॥ सकलगुणमथनि ॥



वामीयुतिनखं ॥ दंवीआगच्छ ॥ दक्षसुख ॥ दक्ष ॥ द  
क्षबाहू ॥ वल्गु ॥ दक्षमतिवल्गु ॥ नववृषिनाकुवल्गु  
क्षति ॥ दक्षहृत्क्षति ॥ ममस्वमन्मद ॥ दक्षायुति  
नखं ॥ स्वाहि ॥ उदत्त ॥ विगुलनहिदि ॥ वामसुनं ॥  
स्वभनताउय ॥ दिकववामदक्ष ॥ दक्ष ॥ नासिमनु  
विधि ॥ दक्षसुनं ॥ १

लं ॥ तावशावत्समसुफलमनावथान्नाधय ॥ कालन  
लं ॥ पत्रमकावृत्तिकं ॥ यानि ॥ रुगवति ॥ गुडमद्युलं ॥  
महाश्वववृषधनिवि ॥ वामसुक्तनटं ॥ विदमववनेमि  
नं ॥ दक्षसुक्ति ॥ सुफलमन्मद ॥ वामाशो ॥ पत्रतज्ज  
नवत्सलं ॥ वामनावध ॥ दविमहाकालिकालनागिनि



॥ वामकात्र ॥ हूं ३ वामपुत्र ॥ प्रसीदमदनाशुना ॥ दक्ष  
पुत्र ॥ कृत्र २ ॥ वामपादांगुलि ॥ सुनासूनकन्यका ॥ द  
क्षपादांगुलि ॥ पक्षीत्र ॥ अधादं ॥ धां दक्षजानू ॥ हूं  
दक्षपादं ॥ रुद्र वामपादांगुलि ॥ रुद्राहा ॥ नृनिपवदं  
द्वयासु ॥ ॥ उं जोषी आधामगक्षेनमः ॥ शंभूत्रनका २

॥ ३ कृष्णाय २ ॥ ३ धंधने २ ॥ ३ श्रीवासुपूत्राय २ ॥ मतिदि  
विंकाय २ ॥ अमृतसमूदाय २ ॥ कनवीनममनाय २ ॥ क  
ल्युक्ताय २ ॥ चतुर्कोलाग्रयादिनीमानार्क ॥ ३ धर्मा  
यनेमः ॥ ह्नाय २ ॥ वेनाह्नाय २ ॥ ३ शंभूत्राय २ ॥ पूर्वादि  
ह्ना ॥ अधर्माय २ ॥ अह्नाय २ ॥ अवेनाह्नाय २ ॥ अनेधर्मा



य२॥म॥॥उ॥प॥प॥त्रि॥॥३॥स॥स॥त॥व॥गु॥भा॥त्म॥न॥न॥म॥भा॥३॥न॥न॥ज॥  
गु॥भा॥त्म॥न॥न॥म॥॥गं॥त॥मा॥गु॥भा॥त्म॥न॥२॥३॥स॥वि॥ना॥ला॥य॥न॥म॥॥  
॥३॥धं॥ध॥म॥क॥न्दा॥य॥२॥३॥गं॥त॥त्वा॥त्म॥क॥प॥द्वा॥य॥२॥३॥प॥क॥नि॥प॥  
॥या॥२॥३॥वि॥का॥त्र॥म॥य॥क॥धा॥त्रा॥य॥२॥३॥स्न॥न॥क॥र्हि॥का॥ये॥२॥३॥न॥  
मि॥म॥गु॥ला॥य॥द॥म॥का॥ना॥त्म॥न॥२॥३॥हं॥सू॥र्य॥म॥गु॥ला॥य॥दा॥द॥म॥क॥ल॥

त्म॥न॥२॥३॥सं॥सा॥म॥म॥गु॥ला॥य॥दा॥द॥म॥क॥ल॥ा॥त्म॥न॥न॥म॥भा॥न॥गु॥गि॥क॥  
॥वि॥रा॥य॥॥॥जुं॥खुं॥का॥म॥रू॥प॥पी॥०॥घी॥पा॥इ॥की॥॥जुं॥खुं॥पू॥रुं॥  
गि॥त्री॥पी॥०॥घी॥३॥॥जुं॥खुं॥जा॥न॥ध॥न॥पी॥०॥घी॥३॥॥जुं॥जुं॥घी॥डा॥घा॥पी॥  
॥य॥घी॥३॥॥स॥ह॥उ॥द॥ल॥य॥द्वा॥म॥न॥म॥॥३॥सा॥ना॥रुं॥व॥ना॥थ॥गी॥पा॥इ॥  
की॥॥३॥य॥म॥ना॥थ॥गी॥३॥॥३॥य॥न॥ना॥थ॥गी॥३॥॥न॥गु॥न॥वा॥क॥न॥घा॥पी॥०॥सं॥पू॥



ॐ॥ ॥ अर्घ्यास्तु उवाच पूजाय कत्रलमदिकं सिधं ॥ नवाकः  
त्रयपूजाय कत्रलमदिकं त्रयैतन्मन्त्रकला ॥ पृथग्मन्त्रं गृहीत्वानाया  
प्रकत्रककुपिकाकलाददं ददवींश्चात्ममूलाभात्रमकाचः  
ॐ उवाच दवीः सहस्रदलसंनिवन्धयत्र गजसिनिवसंती न वि  
राद्यत गाविं गत्या वामनाम्भयूटवत्सनामूलमात्ममन्त्राचन

न ॥ यानिमूढयापत्रमभ्युपगच्छ ॥ त्रिस्रत्रयं यत्रिवात्रयूगांमभुत्र  
निवन्धय ॥ ३ यासापत्रयनादवीखत्रयीखस्रत्रयिनीसर्वरू  
गहिगमातत्रहित्रहियत्रयुत्री ॥ महानूजासनादवीविचन्द्र  
गगनिनिर्मलसर्वरूगहिगमातत्रहियत्रयुत्री ॥ अस्मिन्  
धुलंसा निर्वन्धयसन्नाशवशवन्त्रिदवीमूलैर्वैतन्मन्त्रकला



मावाक मूलविद्यासूत्रम् ॥ आवाहनसंनिधानसंनिनाधसम् ॥  
स्वीकृतमादिशुद्धयुक्तनधनमूलाया निमूलावधायकमग  
रावय ७ ॥ नतासर्वरूपादिषु उक्तं दद्यान्मन्त्रा मनुदहं दद्या  
नसं ७ ॥ नतानवाक्यमसंधय ॥ ओं ह्रीं ह्रीं महामहेश्वर्यै नमः  
श्रीसिद्धयै नमः ॥ ॥ नतापिखण्डदशकं पृष्ठ ७ ॥ ३ न

मंसिद्धि यागिनी महा माय ॥ निबसति कनवी प्रसवदाया ॥  
मं नं विनतजनहि यायत प्रजातिरूढ ॥ हिमकनहि मयु  
यायववक्राममाद्या दिग्युदगयुजा यासाभिर्यसिद्धिलक्ष्मी  
॥ ॥ सुं जयजयजगदमृतमनह निहवदिप्रधनरूपम्  
स्वसूत्रमूकमन्त्रमालायनिमलमिलदतिघटलवयाः



लेयत्रमयुधुनीकषूधुनीकाककत्रकम्बुविमलमन्दाकिनी  
सत्रदिन्दूकन्दावविन्दूकन्दाहसून्दावनित्रयरुजय  
२महाकालनागिनिस्मयवकमलायकागिवनासि  
इगलयागिनी।वीत्रविशोधनीजननिनिक्कून्म्वनिग  
मिनीकदम्बकिन्नरेनवानाधमानकवालाविधानसि

खिलस्त्रीयदवित्रपाकवकूसंविष्टवानन्दवसुदायि  
कजिउवननायिकसूत्रदनधमविमूकावलीकव  
(ध)गास्त्रिचक्रुयवारवनमनअनायामाननवूवल्लशी  
वह्वयरापटलपागलीककसकलदिग्भुलंगु  
सुलोस्त्रसिन्नविगिनीकूकुलसमून्ननपीनक।०न



कूच कल नयू गला कूचाल ललि नन व मूछा वली म  
छि मच छि वू धिन पान य म रु पु न कल कली काल वंता  
ल कल तालि क छु वन गा छु व पु मूखा ट जा किनी चकं च  
क्रमन य किने विताय च म क्का व वि सु व नि पि न्ना य पु  
य म वि क्का व धानि मूखन क व वी व न्ना न वा सिनी नूद

सू न्ना धि वू रू षा जा धा व म धा व दि न्द म न्दि या द व कूच  
ने न्नि म य मू फ रु ऊ ग ग न्ना य मान कू ल कू छु ल नी ग कि  
पु रा पु दी पि का वि दि न मूख म ना सर्व ल वि न म दा का र ग  
ग मि म छु ला मु न धा ना र धा व नी य धा नि धि नि ग म न मा  
न से नू दि न रु से व खि ल सा ध के व पि वि रा य न मा रु च क



सूरविभं मुर्गांक कूंकू मातुत्रु मृगम दंगराग पत्रिमन्त्र  
वासिना वासमलि मलुयंख (लु) न्द्रमलुगो नूज नाक ला  
पालिन कववीना दाल कवहाव ॥ कन ककं ठकी नवमा  
लिका मल्लिका मालिका मदयानिका माधध विका वि  
विध गन्धम धूत गन्ध बाह हलद नूत सवनाचलं धाना

कावकिन पिनयनाचव जय रजग नजननी जय ॥ ५  
नंजय रनवानानव ल्याधिकदिग ना कन मलु मालाधिद  
वत कालिका ल्यायिनिकपालिनि नव वृधिववगा पिनि  
नयवपूतु कपाल कन वाव सिगूल ख दंग घ ॥ ६ मूतु पागं  
कूगवना हय सोरि न दग कन वच्च वीना सन सिद्धवनी



सिद्धि विद्या धनी वल गन्धाय माना धिवलयं गं रुवा वं  
विरु वंदव दंवी महा दंवी जूना र्वा दो से पूरु मा र्वा ल स  
लाव कार्वा जू काना कथा दव सुन द म्ब ना का वं महा वा मि  
वाम वा मं धनी कू डि का कू च नी गाय नी रू च नी दि कु नी  
संव नी ग कि उ क कि त्या क्का हान नू पं गु ला नी न नि त्या मृ गं

नित्य प्राग यद सं भव मानं सम यं ला स्य नी ला वि ना स ठ  
ठ म हान न ठ ज टा रू टा प गा नि म ल द लं का वं सु फ ल का  
व क लो प च रु द ल धी शि गु ण प्र व न्ध वि वि ध व न्ध सु न्द  
व क वि ता। सिद्धि दं वि द्वि बू द्वि दं हान दं मान दं सा म  
दं धा ठ गा क नी ष दू गु त्रि क नि न कू सु म ल मि लि न म



धूकनमूरवनपूलिनपविस्त्र॥विपिनमधुलीता  
धुविनकूलोविपकपकविक्कपपवनपविचल  
दूरुवलयांगरंगवंगिमामुनमकनानिधिदीपविधा  
नदूरुमयवुधनवुधुधुधुदलकमलवक्षीगचक्रव  
हिविनाममानममानमवमिकिगिवाहंलावचकिन

पिनाचपिमात्रिकाविकटदह्यकाटिकटकधुमयम  
दिनविशावविचनविनासनीसूरवविगविगधुतांगनाल  
कनालाकर्मकलरुकालाहलीकूलकात्रयकलिनकूजा  
पविष्टजयवागवाचममसमांजनादिनपनामूर्तिप्रत्य  
गिननवाकनीसवनसैसूरुसाकनीशीकधुवागिष्टविष्वा



मिथुवल्लरुद्रवासुकि का धमूनीमीननाथऊयडथजा  
वालिकमदग्निजमेनाहूतवानका लवायविमलबोध  
विचिगानन्ददवपुरुतिरुवादि विविधयुनूपनपनाः  
सुतिमुदिगहदयगिसदयविविधविद्याधनीकिन्नरी  
गन्धर्ववापचुनाविषिसूगानंकठयनिकस्यशानिया

मानसमयचक्रचित्रितसूचित्रितमधूमाधवीमानसूख  
सिद्धिगिर्लसिंगमाससकयनमन्धरीचतुःसर्नागनागप  
त्रिममलवहलकूचकलत्रुलितविषयविकायपीकिंगप  
यनागसमाकर्तुःलोकेश्वरवकूठुऊयूगनाल्लेषयूनक  
लिमानरुलविलसदिगिरान्नन्दासुतिगवृदात्रिका।वृन्दक



साववेनकलिनयजनयवनाञ्जनताटवीमिलदमन्द  
निर्त्यदधमानमजमदविन्दसन्दादसुन्दनात्रकल्पद्रु  
मापनीलुकसूममालंजयजननिसकुलमालाविमलं  
वनिदावात्रीडवानलदावानलदावालैनेदाहाहृपदं  
साधकसंजावनीषधीनरुमंजनीशंशकंकनूनामृगनन

गिनीउरुंगधनाकटाकृपागेवनन्यगतिमवंगनमकिं  
वतमन्यजनापनमसहायमनाथमीदानींस्वकदंवेव  
नवासिनीमामवलोकयप्रसीदपनमंघ्र्यपनमकात्रुति  
कमहाहंनवत्रयधाविनिशिदगववनमिगं॥ ॥ ॐ न  
मः सर्वसिद्धयोगिनीवक्रवगितनमः सर्वसिद्धमाहर्क  
नी३



ASHA AP. 11. 1965

9101

10/11/65

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



आशा बाल कवि

9101

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES



वदितं सर्वपदं शिवायिका विनतजनविघ्नहानिका  
 कानगहनं दुःखानवकतटिका चोन्नया सुदुर्लभ्य  
 विकदुर्घानि दुर्लभ्य दुर्लभ्य दुर्लभ्य विकटवाटसंकटप  
 तिनविनसंगापघटलविषानिर्गपदूयतुहसृदंगउमन  
 जमवतिष्ठिमाहस्रविविधवाशाच्छवाउमन ४ समनानियू



समनरुवनमानं महासांससमृगमदयुवयूवकर्षयुव  
वयधूपपुथमहामेतरुवनमविषकामिगविदादिताः  
वसगिममिमधुयचयचिचिकाया०यूयुवीकाकसह्याक  
यमूखामननिकनविविधविनयवधजलिपूतविगलिग  
कसममाताविलुतिगाउदलसकलमकुमातयेनगजनवसले

पसीदमदनायुपिठिउवनयुवतिव(म्रइ(म्रइ(म्रतिदलनिन  
यिकिनिखिलवियूयथमथनिनयधित्रवगमांसमिगितास  
वयानयमरुयेयुपटलवधविधसिनिगवतिरवात्राधकान  
मयिसाधकानामहासावनासमुदितसावकानामसिमनविरु  
नियुदसर्वमनासिलखितसकाननयवर्तुनियत्रकस्यानिकत



निष्कृतिरु ना क कृ का। त्यागिनि ममाय वाधं कमल २ ग कि ना। था  
हं मं का की पत्रिज नय निही नत्त दीय चप न व न ल भ ग न त्या अ न न  
व प्र ति म रि वा द या मि अ न वि क या मि सि द्वा त्प व व न ना ना ति र  
य स नू त्प न ना गि म म कि दि रि दि म उ त्प्रा। य ह ग न म मि न य सी  
द २ कमल २ ममाय वाधं सि व २ र्क ति धा सि द्धि ल क्री द या वि स्र उ

महादलुर्क समार्क ॥ ॥ न ना दं वाः स्वरूप ध्यान ॥ ध्या यं  
त्य ना प ना ग किं वि श्वा या स क ल म ना। पू ति मा पू रि ना  
रू या च रि ना स ए ना मृ ता ॥ शा स्त्रा य ना प ना म ना मू  
नो ती ना नि र्ज ना। महा तं जा म यी ल श्री ना सि का धा यै ना  
य मा ॥ निर्म ला नि क ला द वा स क ला कू ल वि ग्र हा। पंच



वक्रांदगलुजा, विषये नयेनेर्युता ॥ (अथ नववर्धमहाः  
 दवा, महाप्रतापविस्मिता। माहकस्य मधुसू, सिद्धिमा  
 गिनिपूजिता ॥ श्रीग्यायजपरावेन, साधकं च समासुता  
 ।दविता स्यालालिहाना, कानापुष्टं कर्तुं जगत् ॥ उक्ता सा  
 क्तासुतागन, वाचयंस्तुलपर्वतान् ॥ कविर्दशकवित्

पं. कवित्संदनपजाः। कवित्सुर्जं कवित्स्यात्, स्व  
 नकुं चापवर्तनं ॥ अथ साहचर्येयुक्ता उवगन्तुविरु  
 धिता ॥ पाठार्कं धवादेवी, वनदारुयपासिका ॥ सः  
 वारुक्षधुर्नखर्भं, येलाककोरुकावर्णी। वामखदाभम  
 सुयं, दक्षिणेशून् मूर्ध्म ॥ अथ नवकन्दर्पनीडं, येलाक



कृतजान्तिर्न। तथा न्यसूस्त्रिर्नमूलं सुकर्म (अन्विता  
न्तिर्न॥ वामे रुक्मिणीं दिवं मद्रावर्त्तः प्रयुजितं। एषा  
प्रत्यंगिना देवी उत्पन्ना वामे रुक्मिणी ॥ एवमेतानि गव  
र्ता रुक्मिणी धारित्री रुक्मिणी वामे रुक्मिणी प्रतिमाया वामान्तिर्ध्वः  
विश्वेदेवैयानि मूर्त्तौ जायते कर्म कर्म जायते विद्या मूर्त्तौ कां का

विद्या मूर्त्तौ कौशालिनि मूर्त्तौ एवैयं कर्म मूर्त्तौ दर्शय ॥ ॥ मूल  
मात्रायां विष्णु प्रयाज लिङ्गं दद्यात् ॥ गता हस्तं खलु गृहीत्वा तु  
नृपयं यात्रादि गन्तव्यं वदुकादि साङ्गं गवत्या न सख्यमकु  
तं तर्क्यामीति ॥ श्रीया इका नन गव्या ॥ मूल देवी नु ॥ १०  
८ ॥ ७४ ॥ २१ ॥ नवा कर्म नयथा गव्या नयती ॥ अगर्ता ॥ स्वाग



[illegible]

देवी श्रीरक्तवस्त्रा युक्ता रुमदिनी पद्मा दीव्यका कमदीय  
 गे ॥ १ ॥ ऐ नो नस्ताने रागवसे नमः ॥ ॥ दधि ॥ स्त्राय यदि धिनाः  
 दधी दध्रा ऐ नवव ल्लरा । जाजतन विमानन गिवला कमदीय  
 गे ॥ २ ॥ रागवसे दधिस्ताने नमः ॥ ॥ घृतमधुमर्कया ॥ घृतचम  
 धूसमिर्था धर्कयारिः समन्वित । स्त्रायामीति देवमी लरतशा



युगं रत्नं ॥ १२ ॥ युगं रत्नं नाम धूस्तानं रत्नं गवतः नमः ॥ ॥ सुखाद  
कस्तानं ॥ सुखादकनं दवीरुं स्नायु रत्नं समन्वितं ॥ सर्वकालवि  
निमूकं ॥ महा नागस्य मूच्यत ॥ १३ ॥ रत्नं गवतः रत्नं स्नानं नमः ॥ ॥  
अतिस्नानं ॥ सुखादकनं मिवा मांसं ॥ तस्मिन् स्नानं नमः ॥ विद्विषि  
द्विषदं पृथ्वी ॥ अतिस्नानं ददा मयि ॥ १४ ॥ रत्नं गवतः स्नानं नमः ॥

॥ ॥ रत्नामूलविद्यामूच्यत ॥ ॥ रत्नामूलविद्यामूच्यत ॥ ॥ रत्नामूलः  
न्दनं ॥ श्रीरत्नं कुरु मे रत्नं ॥ कर्पूरं मृगनाशिनी ॥ विलयनार्थं द  
वभी ॥ गृह्णागमनं लयनं ॥ १५ ॥ रत्नं गवतः रत्नं नन्दनं नमः ॥ ॥  
सिद्धं ॥ वीरं धनीणादि ॥ १६ ॥ रत्नं गवतः सिद्धं नमः ॥ वरु ॥ व  
रुपविषयं नमः ॥ सुखं सोऽग्रायकं ॥ कर्पासिकं रत्नं गन्मातः व



शुभं नमो भगवते ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ यक्ष यवीर्ग ॥ यक्ष  
यवीर्गदं वंभी उक्तं किं समन्विता ॥ गृहाननवतनुच उक्तं  
निर्मितं यत्ना ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ यक्ष यवीर्गदं वंभी उक्तं  
कपाताल उक्तं किं यदधिर्ग ॥ दिव्य वरुण लास्यार्थं दृष्टि  
कं यति गृह्णाता ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ कर्तुं यत्ना का ॥ क

क्षुर्थं यत्नं तद्वि यत्ना काय कर्तुं क ॥ यक्ष सिद्धि द लास्यार्थं  
गृहाननवतनुच उक्तं किं यदधिर्ग ॥ दिव्य वरुण लास्यार्थं दृष्टि  
॥ इक्ष्वाकु गसूग भानि लक्ष्मी गज जय यदी अत्रि द सिद्धि द मा  
गं गृहाननवतनुच उक्तं किं यदधिर्ग ॥ दिव्य वरुण लास्यार्थं दृष्टि  
लास्यार्थं ॥ नाना पक्षसूग भानि माता या विवि भानि च ॥ दव दं व



श्रीगुरुभक्तु मया रक्षा निवेदिता ॥ १ ॥ एतन्मया त्रैलोक्यं नमः ॥  
 तन्मामूलसामिनि उद्युक्तमः ॥ गभयया ॥ दध्मं मे संपूज्य ॥ मूलतः  
 गुणैः श्रद्धा पूज्यं ॥ तन्मा दद्यात्प्रवर्तिताया ॥ यत्रिवात्रेयाय  
 थक २ ॥ दद्यात्प्रवर्तिताया ॥ यत्रिवात्रेयाय  
 कौशौः प्रियं नार्थं सर्वमज्ञासुनायनमः ॥ वरुणं गनसं पूज्य ॥ त

पुकर्जल्यहनया ॥ यत्रयिषु विहितं ॥ ह्रं ह्रं ह्रं दीपायत्रिः  
 स्माययं ॥ ह्रं सिद्धिलक्ष्मीविप्रहृ. कालिकायै धौ मदी. तन्नासंक  
 वसिष्ठया दद्यात् ॥ ॥ तन्मा वल्लिखति विविधमयद्रुमसिं  
 नादिकं दानं ॥ तन्मामूलसामिनि यत्रिवात्रपूज्यार्थं आह्वयार्थं  
 यित्वा यत्रिवात्रपूज्यं ॥ ॥ तन्मा कर्म ॥ जौं धौ कल गनपतिना  
 मि २



थशीपाइकां पूजयामि ॥ २५ ॥ मगलपतिवत्सरां प्रमाणी ॥ २६ ॥  
मवदूकनाथशी ॥ २७ ॥ मवदूकवत्सरां प्रमाणी ॥ २८ ॥ कावपी ० श्रीपा  
॥ २९ ॥ कसूकगणी ॥ ३० ॥ सर्वसंज्ञानिनी प्रमाणी ॥ ३१ ॥ मलकनवीरध  
मनयमी ॥ ३२ ॥ सकलसंज्ञानवत् - कृष्णयात्रणी ॥ ३३ ॥ गदवत्सरां प्रमा  
णी ॥ ३४ ॥ गमावी प्रमा ॥ ३५ ॥ कुम्भ ॥ ३६ ॥ जीर्णवीरनाथशीपाद ॥ ३७ ॥

मकन्दनाथशी ॥ ३८ ॥ श्वमिठमूनिनाथशी ॥ ३९ ॥ श्वयुधनाथशी  
॥ ४० ॥ गदिश्रीघा ॥ ४१ ॥ जीर्णकालङ्गमी प्रमा ॥ ४२ ॥ मार्गमी प्र  
मा ॥ ४३ ॥ श्विनावलिङ्गानिनी प्रमा ॥ ४४ ॥ श्विउवनाथशी  
॥ ४५ ॥ श्विजयनाथशी ॥ ४६ ॥ श्वामदवनाथशी ॥ ४७ ॥ श्वगनिन्दनाथ  
शी ॥ ४८ ॥ श्वडागोवधुनाथशी ॥ ४९ ॥ गदिश्रीघा ॥ ५० ॥ अत्र न प्रमाः



नवोद्यं ॥ कौंशां प कानन्दनाथगी ३ ॥ २०० कानन्दनाथगी ३ ॥ २०१  
जव कानन्दनाथगी ३ ॥ २०२ विन्दनन्दनाथगी ३ ॥ २०३ कानन्दनाथ  
थगी ३ ॥ २०४ तिष्ठुत्तु क म चन्दना क न पूज य ७ ॥ ॥ कौंशां हूँ  
गु क कृण पा ला य न मः ॥ २०५ विप्र ना न क ॥ २०६ निजि का ॥ २०७  
क काल ॥ २०८ कना ल कृण ॥ २०९ कपाल ॥ कौंशां हूँ गु क पा द कृण

पालायगी पादकी ॥ ॥ तमावका आदि ॥ विं कौंशां हूँ कौं  
अप योग आख्यायी मंगला दं ॥ तमावका एविं जी अ ॥ २१० ॥ २११  
मा न रेव वगी पाद क र्या न मः ॥ २१२ कौं अ व वृ ॥ २१३ लायः  
वर्जिका सुन्दरी मा हं ध्वनी आ ग्रे यी ॥ २१४ कः नू नू रेव व ॥  
अयं काला पूनउ हायी आ गयी क वगी को मानी या म्याउ



ॐ नमः शिवाय नमः ॥ अठं अष्टाक्षरं सप्तमी रत्नं सिद्धायी  
खंडकी वैष्णवी अष्टः अष्टः को धरुव नमः ॥ अठं अष्टयन्त्रि  
कं ॐ गायत्री कवू की वा नारी वा नूरी ॐ नमः ॥ उन्नतं रत्नं वन ॥  
अष्टं अष्टयन्त्रिं लायिकिल किलावज की मा हं नदी वा यय  
ॐ नमः कपालि रत्नं वन ॥ अष्टं अष्टका मुकं डी हायी काल

नाली चिपिनी वा मुमुक्षु को वनी ॐ नमः शिवाय रत्नं वन ॥  
अष्टं अष्टयन्त्रिं लायिकिल किलावज की मा हं नदी वा यय  
ॐ नमः ॥ अष्टं अष्टका मुकं डी हायी काल  
ॐ नमः ॥ अष्टं अष्टका मुकं डी हायी काल  
ॐ नमः ॥ अष्टं अष्टका मुकं डी हायी काल  
ॐ नमः ॥ अष्टं अष्टका मुकं डी हायी काल



म्यापी ३ ॥ ४ वंगवनीजूम्बा ॥ ४ मायाजूम्बा ॥ ४ हृदाजूम्बा ॥  
 ४ सिंखिनीजूम्बा ॥ ४ विजलीजूम्बा ॥ ४ ऊर्मजिह्वाजूम्बा ॥  
 ४ मरुकाजूम्बा ॥ ४ घटादवीजूम्बा ॥ ४ चोवमाताजूम्बा  
 ॥ ४ उलूकीजूम्बा ॥ ४ जिंजीरूँखुँ कलिकीजूम्बा ४ ॥ ॥ गंगा  
 जलदल ॥ ४ जिंजीरूँखुँ महाकमलचण्डिनी नौदमुखजांजांजां







॥ॐ श्रीं वा य प्र दः सुं उ य च ले न त म र्द मि दू रं स द न क  
श्वा मां रं सः मृ ए ह न न मः स्वा हा ॥ स्व मा लु ॥ ॥ श्रीं वा  
सुं ग किं जू म्वा गी पा ॥ द क ॥ ३ मि वा दू ती जू म्वा ॥ वा मं ॥ आ  
र म्वा ॥ ३ सर्व रु ना म्वा किं द द या य न मः ॥ ३ नि ल ए फः  
ता ग म र्द मि न स स्वा हा ॥ ॥ श्रीं म्वा नं ॥ ३ जू नां दि वा धि ना

ग किं नि स्वा ये न मः ॥ ने स र्वा ॥ ३ स्व गं तु ना ग किं क वा वा य  
न मः ॥ वा य वा ॥ ३ नि ल ए फ ग किं ने वा य न मः ॥ पूर्वा (य म्वा म्वा  
॥ ३ जू न क ता ग किं जू म्वा य न मः ॥ य द्दि मा रु ना क ना लं ॥ गः  
गा क ना लं स रु द ग र्क ॥ पूर्वा ॥ श्रीं वा सुं व न ना थ गी पा ॥ आ (य म्वा  
॥ ३ र य ना थ गी ॥ या म्वा ॥ ३ क ल ग ना थ गी ॥ ने स र्वा ॥ ३ स्व द्वा ग ना थ



ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ मृगनाथ ॥ वायव्य ॥ ३ विष्णुनाथ ॥ सोम ॥ ३ अरुणः  
गनाथ ॥ ३ धन ॥ खड्गनाथ ॥ ३ उड्ड ॥ ३ कायालनाथ ॥ अश्व ॥ ३ ज्योतिष ॥  
पागनाथ ॥ ३ यादवकाय ॥ यामिनमः ॥ ३ वल्लभ ॥ ३ दशरथ ॥ ३ कर्ण ॥ ३  
गतामिदित् श्रीमन्मन्त्र ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ यक्ष ॥ ३ गतामन्त्र ॥ ३ कर्म ॥ ३ राधा ॥  
यक्ष ॥ ३ राधा ॥ ३ गतामिदित् ॥ ३ मन्त्र ॥ ३ राधा ॥ ३ वायव्य ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥

ॐ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥  
नमः ॥ गता ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥  
लिमन्त्र ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥  
३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥  
दस्वाहा ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥ ३ ज्योतिष ॥



वसुल श्री सिद्धि मन्त्रं रुद्र ॥ वसु ॥ १५ ॥ जौं शौं हूं रुद्र  
३ सा हो ॥ २ ॥ खुं नमो रग वनि सिद्धि ल श्री मन्त्र रुद्र सा  
हो ॥ १० ॥ नैः यं च मन्त्रैः पंचवक्त्रं संपूज्य ॥ नवा कर्तव्य  
विशोक्ति ॥ ३ ॥ ॥ गायत्र्या दशधा संपूज्य ॥ खुं सिद्धि ल  
श्री विघ्नहंसादि ॥ ॥ नमो दत्तात्रेय ना विघ्न नाशाय पंचधा

मूलस्वामिनि पूज्य ॥ त्रिंजलनाः गुफा नवपटता वा या  
गिन्य श्री हरे वक्त्रं पालन गवदू कादय म्भान वा सिन्ना स  
र्वस्वार्थाय पूज्य कृष्ण सिद्धि चक्रं सुमंदा सु सिद्धयः सायूधः  
सदा हनाय विवाचयूना साय चानैः पूजिता मन्त्र हूं रुद्र  
सा हो ॥ वाचयूना न पूज्य ॥ सर्वं ॥ नमो धूय ॥ रुद्रिनि



मकुं लभूय राहुं विचयित्वा सा अयुमुल धूय वा सादिकं ॥  
औं गौं वनस्य निवशास्य नृगं गभ्राद्यं गभ्रमूहं म॥ आधुयस्य  
वदं वानां धूपायं प्रतिगृह्णतां ॥ औं श्रीं रगवसे सा अयस्य  
निवावाय सायू धाय च धूपा रगवसे नमः ॥ ॥ दीप ॥  
दीप राहुं हूं हूं हूं ॥ औं श्रीं सूय का गमदा मंजुः सर्व

उमि मिनायदा सुवाक्कार्यं कनया नि दीपायं प्रतिगृह्णः  
तां ॥ औं श्रीं रगवसे सांगायं सादि ॥ च दीपानमः ॥ गजकु  
मधूय दीप प्रयाग च भवाद न ॥ धूय दीपानां प्रथमं च भू  
यूजय ॥ ॐ औं श्रीं ॐ हूं जगधनि मनुमानसादा ॥ च भू पू  
जनमनु ॥ ॥ नमानेव य ॥ यथा विरुवपकान्नपायसा



दिमधूत्रदद्यानिहंरुट् ॥ अर्घपाकुजलनसिंघ ॥ अन्नः  
यत्रविधिर्वैव नसेः षहिस्समन्विता । मयानिवदिर्गुरुष्व  
गृह्णताम्यत्रमन्त्रो ॥ ॥ रुतादि ॥ कदलीकीजपूवचैः  
नाविर्गुजादिर्मगथा । मयानिवदिर्गुरुष्व गृह्णतेयत्रमन्त्रो  
नो ॥ ॥ कतावल्याश्चर्ष ॥ चन्दनाकनसिन्धुनादिनायागिव

लियूजय ७ ॥ पाकुसुविलगार्घनकनावासनामिकायुष्ट  
य ॥ शुभंमहात्रुडासनायनमः ॥ त्रिंजांतीं हूं हूं हूं हूं मलारं  
ववासनायनमः ॥ त्रिंजांतीं हूं मलारुडासनायममसर्वः  
विघ्नान्नागय २ ममसकलमनावथासाधय २ ०० मां वलि  
पल्ललडादनपूजायथागकिवलिं गृह्ण २ हूं रुट्खादा ॥



नमो सिद्धिदेवाय ॥ जंजीरं मुखं महायनासनाय मम सर्ववि  
द्यान्नामय मम सकलमना वथा न्ना धय २०० मां वलि पत्त  
ल अदन पूजायथा ग किं वलिं गृह्ण २०० रुद्र ॥ ॥ नमो  
समयविद्या ॥ जंजीरं चक्रयाग न्वनी चन्द्रपी १० वाम कालि  
मार्तगिनी ही म कालि काम नूपि ही सिद्ध कालि पूरुगिनि च

दु कालि जानं धनि च दु कालि उा ठि या वि व क कालि सर्व स  
मय लार्क नू २ सू सिद्ध रूप स न स्थी प्र स न २ दे सः सः स्व  
ः स्वः स्वः दि दि जो दू वा दि २ का दि २ खा दि २ खं दू लां खां खां  
लां च्छं दू जो वां जो जो दू शं दू दू दू दू ॥ ॥ सु रुद्रा क  
नी ॥ जंजीरं महायनासनाय मम सर्वविद्यान्नामय मम सकलमना वथा न्ना धय २०० मां वलि पत्त  
ल अदन पूजायथा ग किं वलिं गृह्ण २०० रुद्र ॥ ॥ नमो  
समयविद्या ॥ जंजीरं चक्रयाग न्वनी चन्द्रपी १० वाम कालि  
मार्तगिनी ही म कालि काम नूपि ही सिद्ध कालि पूरुगिनि च



जि०

काकादनी सी ममदा सी मरी ष वीनं वा दनी विष्णु नकी  
कावग्रमनिकालनिष्ठेदनी हा हा हा हा सिनी मदा रन वि  
मदा म्म न सी मवा सिनी हूँ चतु मूखी मदा चतु था गन्ध  
नी जां कुं वीं रुट ज मदा द हूँ रु नं हि मदा रं वि वि रु सिः  
निग्राहि सी मा वि वि भी हिनी हूँ जां रखा हि र वि डा वा वि

जः रखा हि र कुं मदा रं व वा त्स ग वा सि नि मदा मां सा ग  
नि नू द र नू ट र हं र मदा कालि थो थो डां पो ग द लु धा वि नि  
खा व नि मदा मा वि व क्का वि मा हं धनी को मा नी वे धू वी वा ना  
हिय म्म द लु मूख आ ग्रे यी वा नू वि वा य यो काल मूखि चतु था  
गन्धनी मदा र नू हि मदा कृ ता नर रु वी ह द या न न्दः



[illegible]

जेला कृष्ण सैन कवि महाधिववसाहकृष्णजिनि पिवर  
 वमरघा नय २दा २मूव २वल २सु ८ २गे २रु २म  
 हामदा न्मादनि २न २वा सि नि महाय नास्य कल कि नि  
 ॥ हस २सु २मूख २सर्वाय २धधा नि सि महाजम नि उ नूक २  
 य वृ ह २जु २महा वा लायू ध मा सि न ग नि तं जून क व कृष्ण



मागनीववासिनी महादक्षक नावैयवकु कर्वक मू  
खिगृध्वनामसी हृदयविजयविनि सर्वरुगदमनि हनर  
त्रुं त्रुं त्रुं रुट् क पा ला स न स स्त्रि नं दू रुट् महाधो मा वू  
जान स स्त्रि नं दू रुट् । महा काल ना वि दू रुट् गिव दं द्रा व  
रुविनि सिद्ध लक्ष्मी भवनी दू रुट् रुं ७ दिन के व स द स व

पूषं दू रुट् चतु का ध यू गा लु निर्मल दू रुट् महापल  
याग्निपवूषं दू रुट् पुत्र २ दू रुट् पल्लव २ दू रुट् ३ दू रुट्  
२ महाकु वा जं भवनी दू रुट् रुट् पल्लव २ दू रुट् रुं ३ दू रुट्  
दि दू रुट् ३ दू रुट् ३ दू रुट् ३ दू रुट् ३ दू रुट् ३ दू रुट् ३ दू रुट्  
विने क न जा सर्व वि यं रुं ला क या स घ स्या वि मा दि पा स नि कू



श्रीनां० पविष्टगवी वंजूधा वंश्व नित्वनी लव वा रु महावद  
 द्वाकवा लवद नंदय गजवा सुतान निमहा पिनिना सुवम  
 रुदन २ मुखे सुवया गंश्व निमहा माया धात्रू पिनी जीमद  
 वद्युया गंश्व निषां धां धां दृष्ट जषा उग कला न वा सि निरुका  
 नार्द्ध ईया निगि विध्वनित य विध्वय भू कद्य स्म नि उ उ उ उ मत्र

[illegible]



लि  
यथा दयात् ॥ गनद गधसंयुक्त ॥ अवतस नी वंयदानै ॥ जांशी क  
मगदपतिनाथादियुजा कम वलियदानै ॥ वामी युद्धमभमाः  
आगन ॥ जांशी व्वां कृतयुगवदकनाथमम सर्वविघ्नान्नागय २ स  
कलमनात्रथा ॥ साधय २ ॥ मां सर्वोपचात्र वलिगृह २ कंद  
दुस्वाहा ॥ अनामिका जू युद्धमागन ॥ जांशी व्वां कमगदपति

नाथसुवल्गुसहित सर्वजन भवधमानय २ सर्वविघ्नान्नागय  
२ सर्वोपचात्र सदवलिगृह २ कंद दुस्वाहा ॥ ३ व्वां कंदसुक्कान  
गुयालमहागैत्रवमम सर्वविघ्नान्नागय २ सर्वोपचात्र वलि  
गृह २ कंद दुस्वाहा ॥ ३ व्वां कृतकयसनहाहावनात्कटकगुयाः  
तायसुवल्गुसहित वलिगृह २ ममस कलमनात्रथा साधय २



[illegible]

मन्त्रययी० सर्वमंगला वंशा वक्ता यती देवी मम सकल विघ्नान्नाश  
यश्च सकल मनात्रथा न्माधयश्च मां अलियतलज्जदत्त पूजां वलि  
गुरुश्च हृदयसाहा ॥ २ कंज कुंवा ना दस्यो नू नू से न वं ला  
नू व स की सी नि नी मा रु यै श्वरी देवी ॥ ३ यंज यों का  
यू न के उं च लु से न व ज सा नू द न सि द्धा यी ख वै ह कि



की मात्री १

नी देवी ॥ ३८ ॥ ज्ञां अहं हसं कं गुं अं अं कं का प्र रो न व स साः  
नी ह न सि ध यी ख वुं हा की नी वे स वि द वी ॥ ३९ ॥ गुं उं ऊं नी  
कं गुं उं उं न रु रो न वे उं पा नीं ह यी रु ह की कं द्रुं की वा न  
ही देवी ॥ ४० ॥ गुं च रि गं कं गुं न क वा लि रो न व ने मां नीं  
लो नी जा न भ न वुं कि न कि ल न रु कीं लो नी देवी ॥ ४१ ॥

गुं न का स कं कं गुं उं रो ष स रो न व अ ठि या त का ल ना गी कि षिः  
वुं लो चा मू अ दे वी ॥ ४२ ॥ गुं द वि का टं जूं स हा न रो न व जूं अ  
खा ये रो ष ली मा तं गी म हा त वुं स्त्री दे वी म म ॥ ४३ ॥ गुं रो षां धां धा मा म  
ये म म सर्व वि घ्ना ना ग य स क ल म ना त था ना ध य श व लि गृ ह्ण श्रुं  
हृ ह्ण ह ॥ ४४ ॥ धां धा मा व ती ॥ ४५ ॥ धां धा मा ॥ ४६ ॥ धां धा न म यु ला ॥ ४७ ॥



तवीयसा ॥ ३ वं विनाजनी ॥ ३ शुं ताकिनी वलिगृह २ विघ्नानामः  
 य २ मना नथासाधय २ हं रुद्र २ स्वाहा ॥ ३ शुं ताकिनी ॥ ३ शुं लाः  
 किनी ॥ ३ शुं काकिनी ॥ ३ शुं साकिनी ॥ ३ शुं हाकिनी ॥ ३ शुं  
 नं कां ॥ ३ शुं निवा २ वी २ असा वलिगृह २ हं रुद्र स्वाहा ॥  
 ४ अ क क रु ॥ ४ घ टा दनी ॥ ४ यी न मा ना ॥ ४ उ लू की ॥ ४ क लं कि

नी॥ ॥ खं जाँ शं खुं महा कमल चं छिनी प्रोउ मूखी कां जाँ कां शा का  
कमूखी श्री दवी न् माँ वलि गृह २ हूं रुद्र साहा ॥ एव ॥ ४ चं व लु मूखी  
॥ ४ दुर्गा कात्री ॥ ४ रता पिनी ॥ ४ पू पावनी ॥ ४ यः यम घटा ॥ ४  
सो गिव दूती ॥ ४ श्री जय कालिका दवी वलि गृह २ हूं रुद्र साहा ॥  
॥ जाँ शं खुं कल किरी दवी वलि गृह २ सम सिद्धि दहि हूं २ रु



नीदवीवलि॥ ३॥ निवाइगीदवीवलि॥ ४॥ औं श्रीं सर्वरूपादिद्वयगणः  
 क्रियापठंगयावलिगृह्य २०० ॥ ५॥ औं श्रीं वनदनाथ  
 एयनाथकलगनाथखड्गनाथमृगनाथजिसूतनाथजंकना  
 नाथखड्गनाथकपालनाथपागनाथखण्डनाथकयावलिगृ  
 ह्य २०० ॥ ६॥ ३॥ पंचनाथकयावलिगृह्य २०० ॥ ७॥







श्रीयानमः॥ सर्वगपूषमर्दनी इति तां क्लृप्तं हविर्त्वा॥ हंसिनी यम  
दवी सिद्धिलक्ष्मी नमाम्यहं॥ अयदा र्धवतन की यत्र निर्वर्तय दायि  
नी॥ विषययदना निष्ठा सिद्धिलक्ष्मी नमाम्यहं॥ गता सा दयूत युक्तु  
ला कंदला सुं संधूय॥ ॥ जयमालिका गृहीता कंद हृद साधनं॥  
सुं संधूय त्रचन सिद्धयुक्ता कंद संधूय॥ जंजीरी सुं मां मातः

महा मायं यसीद २ मम सिद्धिं कुरु २ कंद हृद साधनं॥ अ० १७ क ३७ ल  
मविलाभन सनन॥ तता मूलमकुं दयथा गकि जयित्वा॥ नि० ४  
मदन उपायना जय०॥ जय गयी॥ ॥ जंजीरी सुं मां मातः  
ग्यादी लं ००॥ एदि॥ जत यति ता तत्र कुं दय अत यय पूकंद दय  
दकि हस्त जय समर्थ॥ ॥ तता घृष्ट वादनं॥ कंजीरी



नमः॥ ॐ नमः चतुर्कायाति ॥ श्रीसर्वकाः ॥ ॐ ॥ वन्द  
सदासकल ॥ श्रीसासुनवदूकनाथ ॥ सिद्धनसाग ॥ श्रीनीडीस  
युक्तघनइतिगहनावैश्ववीकालवका ॥ माहन्दीचविकाखाः  
विविधगलयूगाचकना ॥ थचलकी ॥ स्वगन्धविघ्नना ॥ थचि  
तियतिवदूकायागिनीकृपयाला ॥ एकासाभकनूपाविविधगः

लयूगायागुमावृन्दचक ॥ ॥ नमासिता ॥ श्रीनून्धुर्ग  
हं ॥ क्रोधसमून्धुफयालरुवव ॥ पलागम ॥ धत्वाथशीष  
भक्त ॥ संज्ञानसंज्ञुपदमामिरेववान् ॥ याहुर्गुकोयस्त्रिपू  
नाकक ॥ यावन्निर्वनालदूना ॥ जिह्वा ॥ कर्नकपालचन  
थेकपादा ॥ श्रीमहतीयंगनूरीमनूर्य ॥ नाशीसुवाजमध



विलसद्भूकपूषात्रुर्गा. रासुहासुत्रमधुलं नदिनव  
यथा। निचकं मरु०। नमः॥ अविपनीतमेधूनवतः॥ यश्च  
मृतकामिनीं. पृष्ट्वा ननु गार्ककाटिविकस्ररुजः॥ स्रु  
यां गिता ॥ वादी मूकनिर्वकनिः॥ क्रितिपतिवेधनवः॥ ग  
तनि. गीनि. एव गता मूखिषतिदिनं कल्यानि. तुल्यनमः॥

महिषध्रमहासाथ. चतुमूधुविनागिनं। प्रकवीजहवदं  
वी. उग्रचलीनमाश्रयं॥ पाणीत्यां पवित्रपपीशनलसन्नि  
॥ अथै. नि. ॥ अथै. वक्राहं सकलयवलिमलसुखाञ्चरुता  
रं मूकः॥ पार्यपायमपायनक्रिजगता मूनारुवर्कवर्ष. नि  
त्यं ता. तुल्यवउम्वनविधिना पाया. महार्थवः॥ नमामिप



नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
पुनर्वसुः ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
दशदशानि, सिद्धिस्तुती महेजसा। प्रत्यगिनामहादेवी ना  
जलश्रीनभासुत ॥ १ ॥ यागिनी सिद्धिप्राप्त करुणा मयः  
पुण्यिणी। सानं कानं करुणा य, माहकाहक मध्यग ॥ २ ॥ ज

गन्तानं श्रीदेवी, जगत्संहारक कृष्णम्। जगत्सिद्धिकरी दे  
वी, जगदानन्दका विधी ॥ ३ ॥ श्रीलक्ष्मीजननी देवी, वक्रिचक्र  
समध्याग ॥ ४ ॥ श्रीलक्ष्मी देवी, वक्रिचक्र  
सिद्धिस्तुती महेजसा। प्रत्यगिनामहादेवी ना  
जलश्रीनभासुत ॥ १ ॥ यागिनी सिद्धिप्राप्त करुणा मयः  
पुण्यिणी। सानं कानं करुणा य, माहकाहक मध्यग ॥ २ ॥ ज



जसा जया शनं नृसंयुक्ता नीलकृष्णमूर्धजा ॥ ५ ॥ विनंती  
 पतिना (हं) गि दम दार्दय प्रानिती ॥ खा द्वां गी न गि ना धृत्वा वना  
 घृष्टा दक्षिणा ॥ १॥ का य धूलं च पादं च जूरा या मूढु वाम क  
 सर्वा लं का न संयुक्ता हं म नत्ना द्वि लं कता ॥ ६ ॥ शुक्र वरु प नी  
 धाना मदि नान च वं त सा ॥ नू ड क थ समा नू टा शु ड सू ठि कः

य २

सन्निगा ॥ ७ ॥ च का स्या षि ला च ना सा ख चं द्र क न र्हा रिता ॥ च उ र  
 काम हं गानि दय द सा कृ ता जे र लि ॥ १० ॥ य ता स ना प नि ष कु  
 न का व र्धु म हा क ला ॥ का ठि पू र्ण नू रा द वी क ल न्मां सु म जा सा ॥  
 ११ ॥ ना ना नू प ध ना द वी ना ना न्मा सु म्भू र्णा रि ना ॥ व कू व कू  
 व कू रु जा व कू पा दा म हा व ता ॥ १२ ॥ वि न्व नू पा म हं गानि

पा ० व कू सु ३



लक्ष्मीरूपावताविनी ॥ चिन्तामणिनितादवी चिन्तिता ।  
 र्थरुलपदा ॥ १३ ॥ नमस्वाहासंधावोषट् कूर्काववषट्  
 शुक्रावगममन्त्रामहादवी मन्त्ररूपावताविनी ॥ १४ ॥ आ  
 धावउशिनादवी शुक्रमूर्कटिलोकाति । सूर्यकृत्तुनी  
 गकिः अगम्याममवासिनी ॥ १५ ॥ गनेः गनेः प्रकाशवत्तुनी

दिमहासिद्धि पा० १

पुद्गा २ पा०

उद्गावरादिनी अनिमानीत्यमासिद्धि विद्धिसिद्धिपदा  
 यनी ॥ १६ ॥ पञ्चसप्तपिष्टसंयुक्ता वाजलश्रीजयायगा  
 लक्ष्मीवृद्धियगेदवी दीपकपत्रमंज्वरी ॥ १७ ॥ कूलरूपा  
 मरुगानि नवत्यादिनतदयं । सफादलाभमर्कच सुफः  
 पंचांगानिरुत ॥ १८ ॥ उकारुतमहादवी गुरुवरूपायगेन

श

श्री नवमं २



मः। एतं मन्त्रं महादेवी मन्त्रं माना महं ध्वनी ॥ १९ ॥ सर्वपा  
 पविनिर्मुक्ता आयुना नाशवर्द्धनी। लक्ष्मीयुक्ता हवन्ती मान  
 दात्मरुगजं दुवत् ॥ २० ॥ सफसागत्रयार्थी नीतीर्थज्ञानसक  
 रुवंत ॥ सकृन्मुखा दहसुषी पापघ्नी हवन्ती वत् ॥ २१ ॥ ह  
 वाजगदिनं हवा एव विहिः पूजिता। माहसापि हवा देवी व  
 हा २

१ नक्षत्रसाधिकपाये ४ पा०

वाच १

कृदायुवहासुथा ॥ २२ ॥ लिङ्गाद्यां तादिकपायं सकृत्सूर्ययं य  
 त्। तिस्रं यथागताय मकचिरुसमाहितं ॥ २३ ॥ वधनामूय  
 नपायं नियुं ह्येहो नानिच। नावासकटयन्तानि नम्रयं स्म  
 त्रयं सदा ॥ २४ ॥ दाया नैल रये धात्रे सिंहवाद्यादिसंकटः।  
 विषमगरुनं वक्रोः रुगायस्मानयराय ॥ २५ ॥ यन्मन्त्रादिब्रह्म  
 गजान्हा ३ का १



पुनश्च विना दिनान्नर्त २

षूयन कृत्वा विनाशयन् ॥ कलिकनायिदं वृक्षं विषनाशनसंशुभं  
॥ २७ ॥ सुतायस्मानयकादि ज्ञांदिनासनं कृत्वा कलयाशुभं  
कांदिनि नामयस्मन्मन्त्रिन् ॥ २८ ॥ अचिकितानिवाथानि स  
दातस्यगर्वति हि जलमिह समनी गया इह दानिदमदिनी ॥ २९  
॥ लक्ष्मीं स्वतन्त्रं विख्याता वरुणागपत्रावहा महालक्ष्मी महाका  
लि १

स्तुति २

वृषिणी ३

को सर्वसौभाग्यदायिनी ॥ स्ते ॥ मदित्रानदये गन्या महाघूष  
मिहलायनी अनदसमस्तानि विधुद्रुयावतात्रिणी ॥ ३० ॥ व  
क्षी गोदीधकामात्री वक्षुवीधानेन कौमाहृदी चर्चिका येव  
चष्टिकाष्टकयागिनी ॥ ३१ ॥ अष्टादशी महासिद्धि सिद्धि यागिनि  
मन्त्रगणपूजयदिविषाकारा गन्धमादिरियुषाका ॥ ३२ ॥ पूषय  
ला १



लुप कर्षु नः कशु नीच समा पूर्ण आ वा धियै जगत्सर्वं गला काम  
 पियु जिग ॥ ३३ ॥ गजाग्रमहिमा द्धुग गवा ना च पट रुयै नष  
 पत्यै गि ना ना अ जयै सर्व समा वू धेः ॥ ३४ ॥ बहना ग कि मू क न  
 अ वि नि ना नि सि द्व य स न म उ स दा द वी दुः ख दा त्रि ड ना म  
 नी ॥ ३५ ॥ नमस्कुरु महा द वी नमस्क विश्व त्रु पि टी नमस्क कुं ज ग  
जगतामा १

स्मा ग सि द्वित श्री न मा मु ग ॥ ३६ ॥ ॐ ति थ सि द्वित श्री सु व स म  
 फ ॥ ॥ ४ ॥ लू ला वू ज क रु का ॥ अ ल य ना धि त्रु टी रु ज द ग क यू  
 गी य के व का पि न र्णा व क्त य कि वि स क य क ट न म थ ह स लो अ  
 ल य नी ॥ ४ ॥ इ ह्मा मि न्द्रु ज म मृ ग म य न रू वि श्व स र्ने क चि ह्मा न  
 मि थ सि द्वित श्री म रि म न रु ल दौ सु ल त्रु य वि ध र्ण ॥ अ सा पु त्रि ति



पापहात्रिभिर्जगद्दुःखेषु विष्वसिनी, क्लृप्तस्त्रिभिर्वेप्रिमात्रिभि  
 ततश्चासाकमाहात्रिभिः। अथ यत्कात्रेण कात्रिणी सूत्रवत्प्रपाद्यार्थसि  
 चात्रिणी, त्वं स्याद्विगर्हयन् स हलदं ग्रासिद्विलम्बेन मया आपद  
 र्मुक्ता। अस्मिन्नाद्यमाकांक्षा, देकल्यात्साधनस्य चार्यनूनमगिति  
 कर्त्तव्यं, तत्सर्वं कुरुमर्हसि॥ ७ अस्मिन्नाद्यमाकांक्षा, देकल्यात्साधनस्य चार्यनूनमगिति

नार

गीतसर्वकृपयादवी, कुरुमस्वर्तदयानि (ध्या) अपराधसहस्र॥ ग  
 र्ज्वालात्कथाविहङ्गिण्यनघदंटापस्यघट्टचक्षुः। टाकालिङ्ग  
 नयनीसकलविवर्धकागनालीनलिङ्गसाधारणसर्वविश्वकः  
 यक्षतमपिया काल्यकालीकनाला, यायावावलामानाकलकम्  
 लवनाहासकी कालिकास्वा॥ सिद्धिलक्ष्मीमहाभार्य, मनुमागम



कृष्णप्रीतमया कृतं यत्ना ध्यानि. कृष्णगङ्गाजगदीश्वरी॥ ॥ ॥ ॥  
 त्वायूनः नवा कृतं मञ्जुल्लिख्यं पूजयित्वा॥ पूर्वा कृतं समयविशेष  
 याज्ञसंपूर्ण॥ यदकिं च कृत्वा अर्क्षं पदमनमस्कात्र॥ ॥ गङ्गा  
 पश्ययत्॥ सलक्षणपश्यदद्यात्तस्याय॥ अर्धादकनसंख्यात्॥ पूज  
 नञ्जुष्टाय हृद्॥ संपन्नं कृतं अर्चयुर्धनं॥ वंदनमूढया अमृतीकन

[illegible]







यंदवीव त्रिशाखा ॥ आगनित्रसिदीपकापय ॥ ॥ आशा ॥ सध  
 दंकातराजासि त्रिसकलितोवमालावक्रमूर्त्तिकाध इव उच  
 छुदि निदिगिविविधाः सविधायापियस्यानसनासूरविधरुजि  
 गदधियनियससाददुःसु ॥ २ ॥ आरुयमगुणिदगवत्रनिताचः  
 उकापालिनीव ॥ नूडा नूटगयात्मकस्यजननीधिसिद्धिलक्ष्मीपना  
 न २

विशूकाटिविशानिगजनचलीसुर्भुसिसिद्धिपरासाशागुरुयूता  
 सुसुषययूतादिकानिधिसान्धिकासायंभीकनूतामयीरगवतीर्त्त  
 सविगादंसदा ॥ काटं नूतिदिद्यमानवपूषायलाकविद्यावती  
 नोडत्तपिधृतापरावमहिमायाकानविष्मलयवविष्मयीस्तिनिः  
 सुद्धिर्सदतकत्रीतिवपतायाकलात्वावदनमनरायामत्रमुखीः



५६  
दीप्तिद्विलम्बी नमः ॥ गता दद्यात्प्रविवेकं कं नू विनमस  
मी नमाष्य कदादि यत्तथा यत्तदना कतसि दूनादिसंयुक्त ॥ ॥  
गतकमः ॥ जी शो मयूनास्त्राय पादकां पूजयामि नमः ॥ त्रैलोक्यं  
आपद हानय प्रयनमः ॥ नवान्मूद घणधन उमत्र काश हस्तान्मूर्ति  
कय कलिग वा दहन्त नदी फगुला कलास हस्त किन गमि न्नु नि

नमः नूद अयुधं कपाल कनमून गव दूक नाथ मी शूरज ॥ त्रैलोक्यं  
श्रीं श्रीं श्रीं कृतव दूक नाथ वसन्त सहित अत्र गत २०० मी पूजा वलि  
अत्र पूति विनिर्ग २०० मम सिद्धिं ददि २०० हूँ हूँ हूँ साहा ॥ १ ॥ त्रै  
लोक्यं कालासन श्री पादकां ॥ २ ॥ कृता कालासन म हूँ कृपा ला  
यनमः ॥ शो वल्लु गिनि वासनं रगवनि विन्ध रना गुजन रु



ना न्यादमामिषं अविपनि का धादि कूभा दया । चन्द्रार्कवक्रि  
 चर्द्धिष्टुक्कवटको मंत्रय मा शा धया दवकल्प निष्ठावग्नानः  
 समयं शा काम हा रैवव । **॥** उं जीं घां गुं क ना नासन महावला  
 कटक्कगपालवन्नहा सहि नळ्मां शुं जूलि पिनि न यूजाव  
 लि गृह्ण २ मम धं छो न्ना सय २ दू २ रुट्खादा ॥ २ ॥ ३ मू

ग्नासनशीयादूकां ॥ ३ गं कूल ग व पणिना थायनमः ॥ विघ्न  
 ल्भावः स पा या द्वि कषूज कना एनपीत्वा यस्मिन् नृष्ट स हस्ते  
 वमति न दखिलं दृग्ध नं था मिदं वेः । काय मूः कापि विष्णुः  
 कवन कमलरुः कायननः कवधी कापीर्वाः कापि (ने  
 ला कवनमनिगदः कापिन कादिसत्वाः ॥ **॥** उं जीं घां गुं गं कूल  
 शुं



गद्यपिनाथवल्लभासुहृन्मविलिष्टः २ मम सर्वविघ्ना  
नामय २ हूं २ रुट् स्वाहा ॥ ३ सिंहसनपायू ॥ ३ यां सा सर्वथा  
गिनीशानमः ॥ योगिन्ना कामरूपा सकलगुणयूगा गफकार्क  
म्वराहा मरुर्क कालमाला गलगलगल गढी नकवला रुनीया  
। लिंगं पाई कपालं गृणि विविधधृता सर्वदा सुप्रसन्ना रक्ता

नासाधकामसिमनरुलदा सर्वदा सुप्रसन्ना । उर्ध्ववक्रा गुहा  
रगदिविभुविगग (ग) रुगलनिः कलवा पातालं वानलं वा  
सलिलपवनशायकूणास्ति तावा ॥ अंगपी (अ) पपी (अ) दिष्टूः  
चक्रतपदा पूष्यधूपादिकं न पीता दंष्ट्रा सदानः गुरुवलिः  
विधिना पातु वावी ववन्धा हूं रुट् स्वाहा ॥ ४ ॥ अं जीं गं पेतास







साविपिठिका माषमीनपिष्टिदिनानाद्यंजनादिआमिष  
 वस्त्रवाद्यध्यादिनाथामूलस्यामिनीनां सांगं गलवदूकः  
 कृत्वागिनीकं सनृष्य ॥ अलिधाययासंस्तुनयसंगर्षसा  
 मानसमयकावयं ॥ गण्यं ॥ पतःपताद्यादि ॥ पूरुन  
 विपिर्गः पूनश्च षट्कः गङ्गा नर्मूकं माषेऽपि विपि

नकेश्च सहिगे लो लज्ज वा दचलेः गेल्यः सन्त्रवले सुदीप्य  
 समयेगीसिद्धिर्विनामनि बुक्काद्यादिगल्लगश्चवगत्तः स  
 वाथदासुतुनं ॥ अविनाशाद्यादि ॥ ॥ नमो वायुक्रमद  
 या ॥ वीरजनं तु कंसुनि ॥ नमि मरुत्तु आचार्यप० नू ॥ जंज  
 यनिका प० नू ॥ यादि वायुक्रमदूषिका समयिनामा वंगका



ःसुनुना. दंष्ट्रावकूलयागिनीनमस्कायाकूलदंष्ट्रिना। वीन  
सुव्याविनिन्दकाकूलवधूनेहासकापूजनं। डाहादीनपियः  
पगुरुगमिनिषधीगिनीमद्युलं ॥ हलंवावदूकासयस्स  
गल्लःपुनापिनावागुहाःवंगालावगयकुरुनपिगनः  
कृणाधिपानाकृशाः। ययैलाकृगल्लधुदूरुटधियाःपा

यान्महासद्युले. सुफायाकुरुसदास्वधार्पितधियासांसा  
दिनानन्दिरिः॥ स्वर्णेशीमित्रसागलंजलनिधौस्त्राव  
क्रिदिकुरुहिना. गुरुस्त्राकूलगवताध्यापीजनितास्त्रकृग  
जामकृजा। यागस्त्रासुहृजाश्चयविनाशीकीलिकासकृजा  
यागिनीःपललासकामनिवताःस्त्राःसर्वदापागुनः॥ द्वा



वस्त्रसदृशकृत्वादिनिलयः नमः काननं गूढागमवि  
हावकन्दनमममहागममनसिना। कूपस्थानगताध्वु  
ष्य० गतासंदृशं स्थाप्यते पक्वानादनदुमांसकसूर्मसं  
गृह्णन्ते सर्वदा ॥ ॥ समं यं कृत्वा च ॥ वं वं मुखवासं द  
त्वा ॥ वलि विसर्जनं ॥ जो सुमुखी देवी वलि गृह्णन्ते रुद्रं  
रुद्रं

स्वाहा ॥ ॥ उर्वं संहारनमूद्रया नालगं यं कृत्वा दीपं दत्वा व  
लिप्रसादयथ ॥ ॥ उकानं कुरु वक्ति ॥ उकावी नृत्यपादं ति  
जृतिषक ॥ चन्दनं सिन्दूरं मोरनीं सुगन्धं पूषादिकं  
गृह्णीयात् ॥ तता देवी पूषा जर्ति दत्वा सकुमुदापं चक्रे य  
दग्धं गीर्तिमहा लक्ष्मी या पूका पना मुखार्घवा षट्पूर्य  
त्वा २



सुखसुखानं गतं लयं । न कश्चिदपि मरुद्भानि, यूनतः विजयाय  
 च ॥ सह दयं देवी लीनं रावय ॥ अथ भानरुमं धूलं सि  
 धिलक्ष्मी च त्रिकार्यं सुमुखेन मः । निंजीं जीं को मा ल्येन मः । नि  
 जीं वं वदू कायन मः ॥ ॥ निंजीं सिद्धिलक्ष्मी पूजा पद्ध  
 ति वदू सं समापं ॥ ॥ गुरु ॥ सं ॥ ॥ आषाढ शुक्ल १३ ॥



कं २१

वें

धं

यं

कं

मं

मं

वें

न



ॐ इन्द्राय नमः ॥ अथ नव नाग विधि  
 ॥ उषस्य स्थाय प्रातः स्मृतं दत्तं धावन  
 ॥ अत्र अश्वपुर्वकं शीतवता सन्निधौ  
 गत्वा प्रातः शयनपुर्वकं दवता रिमू  
 खस्त्रित्वा कृतांशुलिपुर्वकं गच्छात्

नसदिनं अश्वलोपुर्वकं गृहीत्वा सुतयुक्ता नवा दवां ध्यात्वा मूला  
 दिवक्त्रं चान्नं मूला विद्यात्मनः ॥ न च ध्या ॥ दवगिरुकि सुलरा  
 गत्रसा गतवत्सलं सर्वसुगदिनमाग सोम्यत्रोत्तत्रयिनि ॥ स  
 वमनुमयदवि सर्वसिद्धिदायिनि सर्वविद्यालयरुद साग  
 केवल्यदायिनि ॥ सदा जायदसा नृप सनदेन सुत्रयिनि साधका



नादिगार्थय. इक्ष्वा नांमर्दनाय च ॥ त्वद्वार्षिकपूजार्थं नवनाग  
 मूषिर्गो ॥ ३ ॥ लिख्ममत्यसादार्थं पत्रिक्तनगलेस्सह ॥ कृपयायादिः  
 मीनिर्णयैला कानन्ददायिनि ॥ नवनागस्यार्थं मनूहस्तुमह  
 ध्वनि ॥ ॥ ॐ नित्यपूजा ॐ लिन्दत्वा यंच मूढारिर्नमस्कृत्य ॥ ॥  
 क्रमात्रीवनत्वायाद्य. ममाह्लादाहसून्दनि ॥ ॥ ॐ नित्यं कल्पं कः

य३  
 ला. आह्लायाथयित्वा ॥ ॥ क्रमाश्यामकुंल. वाद्यादि रि॥ गन्धादि  
 वस्तुसाधकसूदनी वृन्दसायाध्यां ॥ ॥ क्रमात्री अचमनादिकाः  
 नयित्वा. कृता ॐ लिंवधाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो नमो महोदवि. क्रमात्री  
 त्रयध्वनिनी ॥ अग क्रममपूजार्थं सर्वसिद्धिपदाय च ॥ ॐ नमो  
 क्रवाला मकुंल. गत्या दयायताम्या ॥ गद रु रुतपूजादिपसादय



दीत्वा वा यथाचारिः पुनर्मादित्रमागच्छ ॥ पुनर्वन्दये यथागच्छिः  
दक्षिणं दत्वा ॥ स्नानादिनित्यपूजाविधाय ॥ नेमिलिकस्यार्थं  
ननाचम्य नेमिलिकसं कल्प्य ॥ पात्रायामसामान्याद्यादिकं सावन  
मन्दर्वाङ्गकिपूजा नैस्युक्तं नित्यपात्रविधिना ॥ कलमस्त्याय नन्द  
वीदक्षितराग ॥ गद्यथा ॥ हृष्टित्वामगुलं कृत्वा ॥ नैऋत्यं शुक्लं  
कुं

ह्येमुलिकदहिमसिद्धिनिप्रवर्त्तकसंश्रवणधनधनसमृद्धार्थं  
ज्ञामीत्येकमध्वनी ॥ ॥ गिमन्तकिमिकमादिवर्जितमुलिक  
समानीय चतुःसंस्कारं कृत्वा मूलतमगुलमुलिकांसंस्कारमध्व  
गर्लकृत्वा सज्जीकृत्य ध्वजध्वनानैः यत्र यत्र वनजस्तजलनयका  
लितवीजसाधन ॥ मूलतममुलिकां नैऋत्यं निमलपत्रागद्यविधाय ॥



गतागन्धादि लिङ्गलिङ्गिकां पूजयित्वा ॥ मूलपङ्क्तिमानस्य पंचयुगा  
नृगर्तश्चासनं संपूज्य ॥ पंचयुगवद्वालया कालिना ॥ शुद्धं न कव  
र्तुमनादने न कवचं न न संलिया न कसूतं न वद्वयित्वा पूज्यमाल  
यालनं कथा सुगन्धिसूयित कलर्ग पूजिता धा नयति स्मया ॥ गणसू  
र्य कला संपूज्य घटमश्वविन्दुगर्भिकां विलिख्य विद्यामूलं

विकाशं लिङ्गं लिख्य गणद्वीमावाक्यं यापयानं ॥ संपूज्य शु  
द्धादकन संपूज्य सद्विनीय न द्दुना ॥ अनूयानि मूर्त्तय दग्ध ॥ पाठ  
ग कला रिसं पूज्य पंचनल पंचपल्लव पूज्य ॥ इव कनकगनवन  
लानि कलशस्य मुखं पंचयुगवद्वसं स्थाप्य न कवचं न वद्वयित्वा नालि  
कलरुलादि लिङ्गं कलशाननमाकाशजलं हतं वाणी चर्कं संस्थाप्य



वाठ (ग्रायचा नं०) गयसा वनर्धं दर्वीसंपू कविष्टनं धर्मं कथनव  
 धीयत्र दवतामहाकाली खनूपलध्याचा संपूक ॥ ॥ गंगा उग्रचक्र  
 पूजा ॥ ॥ ॐ नमो नाट्ये त्राय ॥ नासियाव न्यास ॥ ॐ जं जं जं ४  
 स्त्रोय हू ॥ ४ ॥ कनसाधन ॥ ॐ जं जं जं ४ स्त्रोय नम ४ ॥ ॐ जं जं जं ४  
 नम ४ ॥ ॐ जं म ॥ ॐ जं जं ॥ ॐ जं क ॥ ॐ जं ४ कन ॥ नर्वहदयादि ॥ ॥

[illegible]



ब्रह्मकात्रशास्त्रिणं ॥ न वंश्चामदादव नाटकार्यसुसिद्धय ॥ मा  
 नवानेकगार्थय सर्वद्विगनाशनं ॥ नाट्यत्रसम्मानमल्यविचिन्  
 य ॥ ॥ ॐ हूं श्रीं गृन्मन्त्रयमहासेन वायव्याधनगकिमहिताय  
 अवगनश्चाहा ॥ १ ॥ ॐ हूं श्रीं वात्रयमहामेसेन वायव्यधर्मगकिमः  
 हि ॥ २ ॥ ॐ हूं श्रीं कन्दनयमहासेन वायव्यधर्मगकि ॥ १० ॥ २ ॥

ॐ हूं श्रीं काष्ठ त्रय महा रत्न वायव्ये नारु ग कि १०॥ ४॥ ॐ हूं श्रीं हास्य  
त्रय महा रत्न वायव्ये नैर्घर्ष ग कि १०॥ ५॥ ॐ हूं श्रीं शयान कर्ष त्रय  
महा रत्न वायव्य रूढ ग कि १०॥ ६॥ ॐ हूं श्रीं वीर रक्ष त्रय महा रत्न  
वायव्ये नारु ग कि १०॥ ७॥ २ श्रीं त्रुड त्रुष्ट त्रय महा रत्न वायव्ये नैर्घर्ष  
ग कि १०॥ ८॥ २ श्रीं सोम त्रय महा रत्न वायव्ये नैर्घर्ष ग कि १०॥







नडे ॥ डं म ४ डं ॥ ॥ जीं डं जीं ॥ जीं जीं जीं ॥ जीं डं जीं ॥ जीं हां जीं ॥  
जीं डं जीं ॥ जीं दां जीं ॥ जीं कां जीं ॥ जीं न जीं ॥ जीं म ४ जीं ॥ ॥ डं डं  
डं ॥ डं जीं डं ॥ डं डं डं ॥ डं हां डं ॥ डं डं डं ॥ डं दां डं ॥ डं कां डं ॥  
डं न डं ॥ डं म ४ डं ॥ ॥ हां डं हां ॥ हां जीं हां ॥ हां डं हां ॥ हां हां हां ॥  
हां डं हां ॥ हां कां हां ॥ हां कां हां ॥ हां न हां ॥ हां म ४ हां ॥ ॥ डं डं

डं ॥ डं जीं डं ॥ डं डं डं ॥ डं हां डं ॥ डं डं डं ॥ डं दां डं ॥ डं कां डं  
॥ डं न डं ॥ डं म ४ डं ॥ ॥ कां डं कां ॥ कां जीं कां ॥ कां डं कां ॥ कां हां  
कां ॥ कां डं कां ॥ कां कां कां ॥ कां कां कां ॥ कां न कां ॥ कां म ४ कां ॥ ॥  
कां डं कां ॥ कां जीं कां ॥ कां डं कां ॥ कां हां कां ॥ कां डं कां ॥ कां कां कां ॥  
कां कां कां ॥ कां न कां ॥ कां म ४ कां ॥ ॥ न डं न ॥ न जीं न ॥ न डं न ॥



नहंन ॥ नहुंन ॥ नक्रांन ॥ नक्रांन ॥ ननन ॥ नम४न ॥ ॥  
म४हुंम४ ॥ म४जीम४ ॥ म४द्रुंम४ ॥ म४हंम४ ॥ म४हुंम४ ॥ म४क्रां  
म४ ॥ म४क्रांम४ ॥ म४नम४ ॥ म४म४म४ ॥ ॥ हनं विलाम ॥ म४  
म४म४ ॥ थनीनिर् ॥ हुंहुंहुं ॥ थनर्गा ॥ ॥ हनं लाम ॥ हुंहुंहुं ॥  
थनीनिर् ॥ म४म४म४ ॥ थनर्गायाय ॥ ॥ धमगर्जिनक्रम ॥ ॥











